जैन साहित्य एवं मंदिर उपकरण

हमारे यहाँ सभी प्रकार का दिगंबर जैन एवं भारत के सभी प्रमुख
धार्मिक संस्थानों का सत साहित्य एवं मंदिर में उपयोग हेतु उपकरण
और प्रभावना में बाटने योग्य सामग्री सीमित मूल्य पर उपलब्ध है

(पांडुशिला ,सिंघासन, छत्र, चवर प्रातिहार्य,जाप माला ,मंगल कलश, पूजा बर्तन ,चंदोवा,तोरण ,झारी ,

(शुद्ध चांदी के उपकरण आर्डर पर निर्मित किया जाता है)

नोट:-हमारे यहाँ घरो में उपयोग हेतु ,साधुओ के उपयोग हेतु ,
अनुष्ठानों में उपयोग हेतु शुद्ध घी भी आर्डर पर
उपलब्ध कराया जाता है

SOURABH KUMAR JAIN
9993602663
77229 83010
SOURABHJN1989@GMAIL.COM

श्रमण संस्कृति रक्षक दिवस

श्रमण संस्कृति की रक्षा करने का पर्व जिसको
रक्षाबन्धन महापर्व के रूप में मनाते हैं

इसको श्रमण संस्कृति रक्षक दिवस के रूप में मनायें।

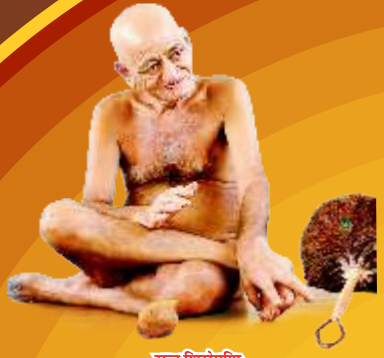

सन्त शिरोमणि
आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महाराज

निर्यापक श्रमण
मुनिपुंगव श्री 108 सुधासागर जी महाराज

श्रमण संस्कृति रक्षक दिवस जयवंत हों एवं हार्दिक शुभकामनाएं

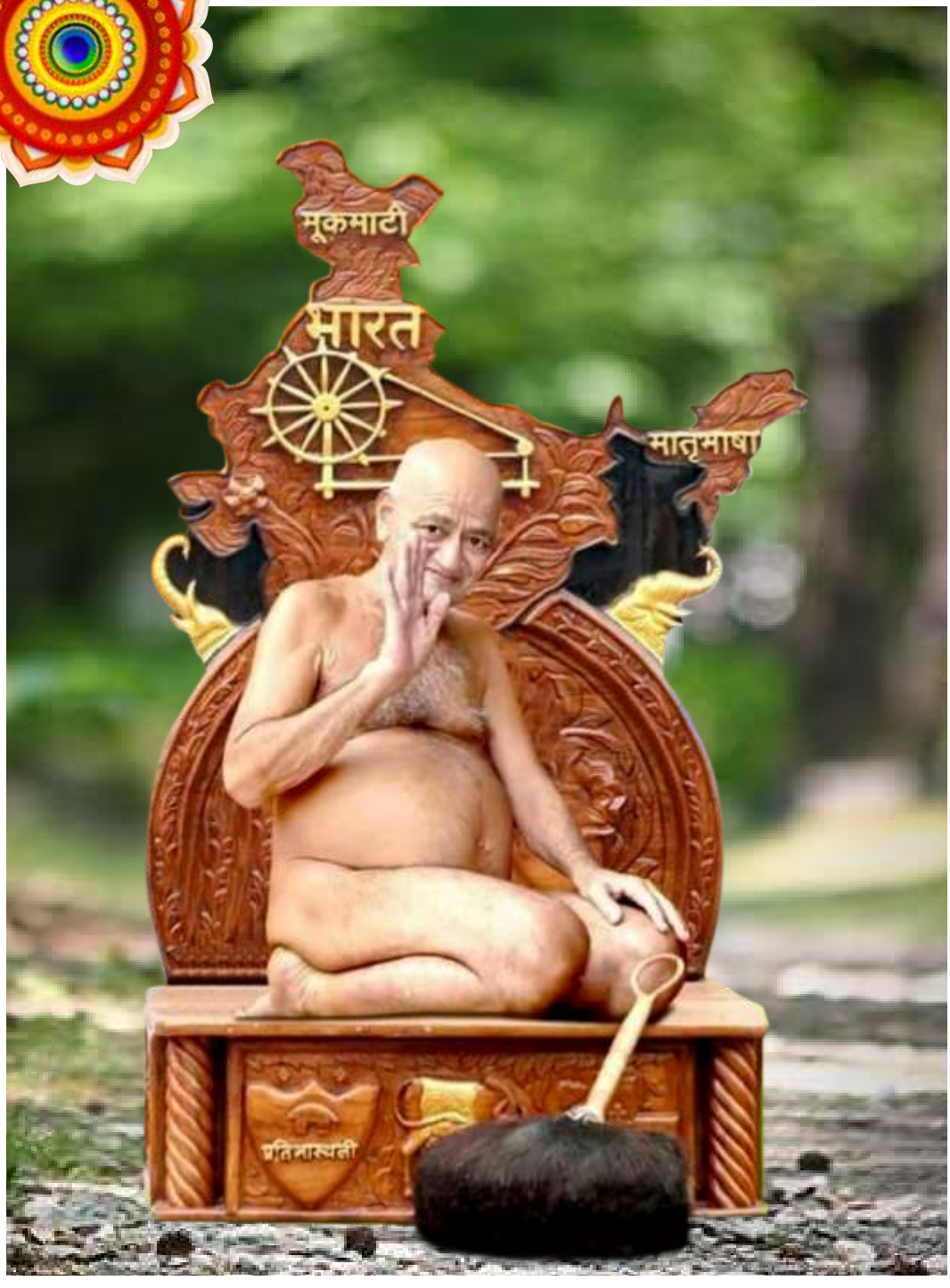

संतशिरोमणी आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महाराज

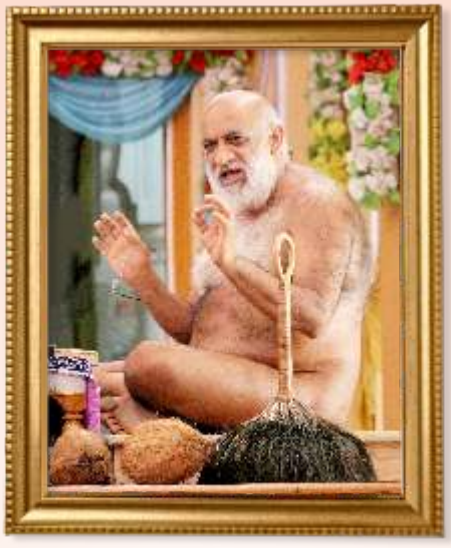

प्राचीन तीर्थ जीर्णोद्धारक, वास्तुविद, पुरातत्त्व - सरंक्षी, नव तीर्थ - प्रणेता, साक्षात तीर्थ-स्वरूप, ज्ञान रथ के सारथी, विद्या गौ के सुदोग्धा, श्रमण संस्कृति - सूर्य, मिथ्यात्व भञ्जक, शान्ति-धारातिशय निदर्शक, श्रावक संस्कार शिविर जनक, जिज्ञासा - समाधान - प्रतिपादक, विद्धत्कल्पतरु, विद्यार्थि-पितृकल्प, आगम के यथार्थ उपदेष्टा, वर्तमान काल के समनतभद्र, समयसार - शिक्षक, भक्त-वत्सल, महोपकारी, महान्तपोमार्तण्ड, रिद्धि - सिद्धि भक्तामर मंत्रो के निदर्शक, ज्ञानध्यान तपोरक्त, प्रखर चिन्तक, तर्क - वाचस्पति, विपथ - गामि-चक्षुरुन्मीलक, वाग्भी, मनोज्ञ, ऋषिराज,

निर्यापक श्रमण, जगत्पूज्य मुनि पुंगव
108 श्री सुधासागर जी महाराज

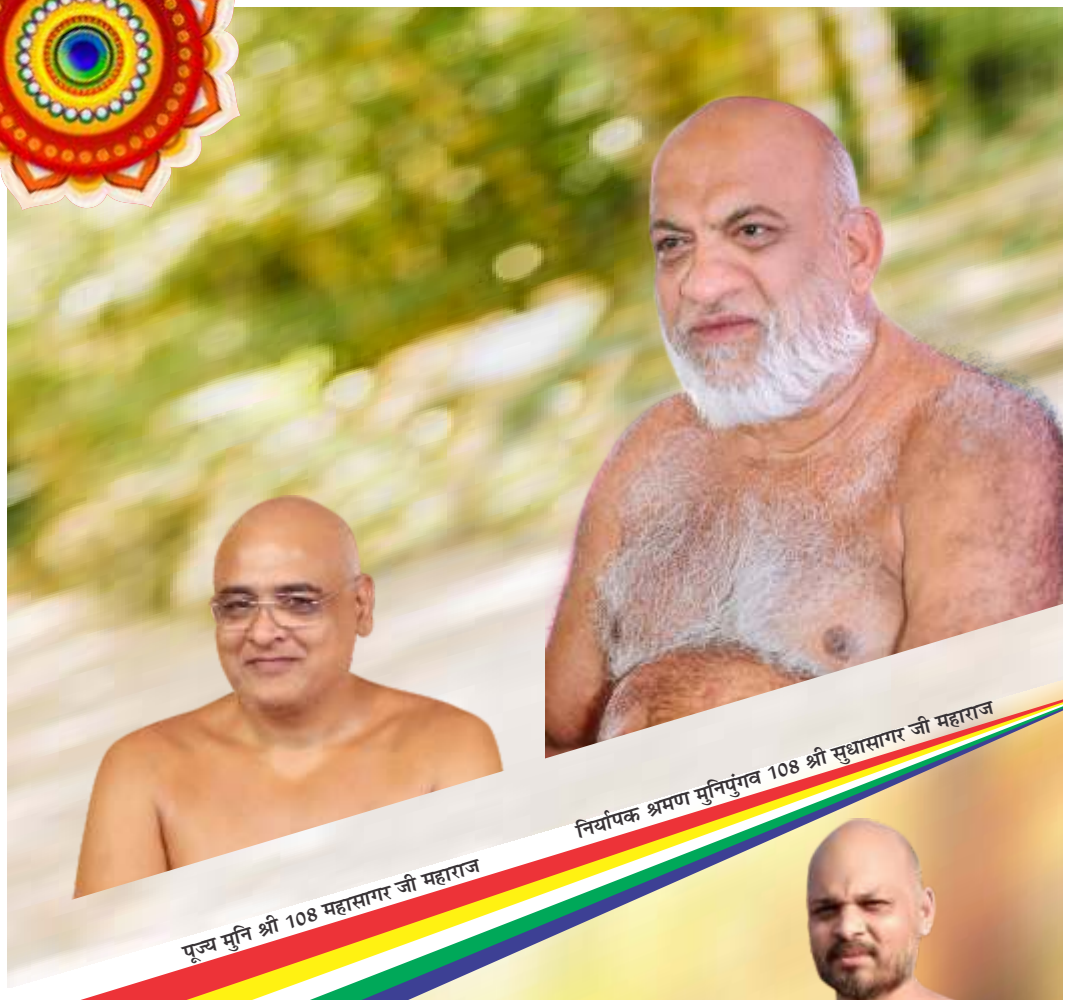

पूज्य मुनि श्री 108 महासागर जी महाराज

निर्यापक श्रमण मुनिपुंगव 108 श्री सुधासागर जी महाराज

पूज्य मुनि श्री 108 निष्कम्प सागर जी महाराज

पूज्य क्षुल्लक श्री 105 गम्भीरसागर जी महाराज

पूज्य क्षुल्लक श्री 105 धैर्यसागर जी महाराज

तीर्थंकर श्री श्रेयांसनाथ पूजा

श्री अकंपनाचार्यादि सप्तशत महामुनि पूजा

श्री विष्णुकुमार महामुनि पूजा

रक्षाबन्धन कथा

मङ्गलाष्टकम्

अर्हन्तः सुरनाथ-पूजितपदाः, सिद्धाः शिवं प्राप्तकाः,
आचार्या भविदीक्षकाः श्रुतधरा, जैना उपाध्यायकाः।
सम्यग्दर्शनबोध - वृत्तचरिताः, स्वात्मस्थिताः साधवः,
आराध्या यतिभिश्च पञ्चगुरवः, कुर्वन्तु ते मङ्गलम् ॥1॥
जैनेन्द्रोक्त - सुधर्ममोक्ष - सुखदं, दृग्बोध - चारित्रकम्,
पीयू - षौषधरूप - जैनवचनं, जन्मादि - रोगान्तकम्।
त्रैलोक्यस्थित - जैनचैत्यभवनं, जैनेन्द्र - चैत्यानि च,
जैनाराध्य-जिनादिदेव - नवकं, कुर्वन्तु ते मङ्गलम् ॥2॥
नाभेयादिजिना ऋषीन्द्रमहिता, वीरान्त - तीर्थंकराः,
श्रीयुक्तैर्भरतेश्वरादि - प्रवरैः - सच्चक्रिभिः पूजिताः।
ये विष्णु - प्रतिविष्णु-लाङ्गलधरैः, सम्पूजिता विश्रुताः,
वन्द्या इन्द्रशतैश्च भान्ति भुवने, कुर्वन्तु ते मङ्गलम् ॥3॥
ये गर्भोत्सव - जन्मपूजितजिना, दीक्षोत्सवं प्राप्तकाः,
कैवल्योत्सव-चामरादिपतयो, निर्वाणपूजां गताः।
प्राप्तानन्तगुणाश्च दोषरहिताः, पूज्याः सुरेन्द्रादिभिः,
ये कल्याणक-भाजिनो जिनवराः,कुर्वन्तु ते मङ्गलम् ॥4॥
कैलासाच्च शिवंगतः पुरुवरः पूज्यस्तु चंपापुरात्,
श्रीनेमीश्वर ऊर्जयन्तगिरितः, पावापुरात् सन्मतिः,
सम्मेदाचलतश्च शेषजिनपाः, सिद्धिंगतास् - तीर्थपाः।
आत्मानन्दरसं पिबन्ति सततं, कुर्वन्तु ते मङ्गलम् ॥5॥
ये बुद्ध्यर्द्धि-बलर्द्धि-युक्तमुनयः, खेगामिनश - चारणाः,
ये दीप्तादि - तपर्द्धि - युक्तयतयः, क्षीरादि-स्त्रावीशकाः।
ये सर्वौषध-विक्रियर्द्धि सहिता, अक्षीण-वासान्नकाः,
इत्थं सर्वमहर्षयो गणधराः, कुर्वन्तु ते मङ्गलम् ॥6॥
मूलं यस्य दया महाव्रतजलैः, पुष्टा अहिंसालता,
शाखाः शीलगुणाः कलिः समितिका, पत्रं च सम्यक्तपः।

मैत्रीस्कन्ध - सुसाम्य - गन्धहितदं, स्वर्गापवर्गौ फलं,
शान्तिस्तापहरी स धर्मतरुकः, कुर्यात् सदा मङ्गलम् ॥7॥
सर्वज्ञेन विलोकिता भुवनका, भावा यथावस्थिताः,
तै र्गुम्फीकृत - शास्त्र - वाक्यरचना, जैनागमः कथ्यते।
यस्मिन् लीनमुनीश - सिद्धि - रसिकाः, कर्मक्षयं कुर्वते,
तं वन्दे शिवसौख्यदं जिनवचः,कुर्यात् सदा मङ्गलम् ॥8॥
पूजारम्भ-जिनोत्सवे मृदुकरं, क्षेमंकरं चाष्टकम्,
ये शृण्वन्ति पठन्ति मंगलमिदं, भक्त्या सदा सज्जनाः।
ते भव्याः कृतिनो भवन्ति भुवने, प्राज्ञैः प्रशंसां गताः,
लब्ध्वा लोकसुखं च मौक्तिकसुखं, शीघ्रं लभन्ते बुधाः॥9॥

॥ इति मंगलाष्टकस्तोत्रम् ॥

विद्यासागर-वीतराग-गणिनं, ज्योतिर्मयं ज्ञायकं,
पंचाचार-समग्र-शोभित-पदं, ज्ञानोदधेः शिष्यकम्।
आचार्यं गुणधारकं कविवरं, साहित्य-संसाधकं,
कौमारं शिवसाधकं मृदुकरं, भक्त्या प्रवन्दामहे ॥

●●●

श्रीश्रेयांसनाथ जिन पूजा

वसंततिलका छंद -तभजज गण दो गुरु

श्रेयांस नाथ जिन सिद्ध विशुद्ध स्वामी,
आओ मदीय उर में जिनराज नामी।
पूजूँ तुम्हें विनय से उर में बिठा के,
जाके वसूँ विभव मोक्ष निजात्म ध्याके ॥

ओं ह्रीं तीर्थंकरश्रेयांसजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वानम् ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम्।

क्षीराब्धि सा सलिल प्रासुक शुद्ध लाये,
भृंगार में भर लिये, पद में चढ़ाये।
श्रेयांसनाथ जिन सिद्ध सदा समर्चूं,
निःश्रेय प्राप्ति करने जिन पाद चर्चूं ॥

ओं ह्रीं श्री श्रेयांसनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

गोक्षीर सार वर चन्दन घर्ष लाये,
श्रद्धा समेत जिनराज पदों चढ़ाये।
श्रेयांसनाथ जिन सिद्ध सदा समर्चूं,
निःश्रेय प्राप्ति करने जिन पाद चर्चूं ॥

ओं ह्रीं श्री श्रेयांसनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

मुक्ता समान सित अक्षत पुञ्ज लाये,
धारें जिनेन्द्र पद में विपदा पलाये।
श्रेयांसनाथ जिन सिद्ध सदा समर्चूं,
निःश्रेय प्राप्ति करने जिन पाद चर्चूं ॥

ओं ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

हैं केतकी प्रमुख पुष्प सजीव माने,
तो पीत तन्दुल लिये प्रभु को चढ़ाने।
श्रेयांसनाथ जिन सिद्ध सदा समर्चूं,

निःश्रेय प्राप्ति करने जिन पाद चर्चूं ॥

ओं ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य सार जिनदेव तुम्हें चढ़ाके,
है भावना जिन बनूँ उपवास पाके।
श्रेयांसनाथ जिन सिद्ध सदा समर्चूं,
निःश्रेय प्राप्ति करने जिन पाद चर्चूं ॥

ओं ह्रीं श्री श्रेयांसनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है स्नेह पूरित सुदीप तुम्हें चढ़ाऊँ,
कैवल्य ज्योति प्रकटे श्रुत ज्ञान पाऊँ।
श्रेयांसनाथ जिन सिद्ध सदा समर्चूं,
निःश्रेय प्राप्ति करने जिन पाद चर्चूं ॥

ओं ह्रीं श्री श्रेयांसनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अध्यात्म सौरभ बसे दिन रात स्वामी,
हो कर्म धूप तप आग सुवास नामी।
श्रेयांसनाथ जिन सिद्ध सदा समर्चूं,
निःश्रेय प्राप्ति करने जिन पाद चर्चूं ॥

ओं ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीतिस्वाहा।

द्राक्षा सुपक्व फल श्रीफल को चढ़ाऊँ,
पाऊँ सुमोक्ष फल को शिव सौख्य पाऊँ।
श्रेयांसनाथ जिन सिद्ध सदा समर्चूं,
निःश्रेय प्राप्ति करने जिन पाद चर्चूं ॥

ओं ह्रीं श्री श्रेयांसनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीरादि द्रव्य वसु ले कर में सुहाये,
पाने अनर्घ हमने प्रभु को चढ़ाये।
श्रेयांसनाथ जिन सिद्ध सदा समर्चूं,
निःश्रेय प्राप्ति करने जिन पाद चर्चूं ॥

ओं ह्रीं श्री श्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक अर्घ

(सखी छन्द)

श्रेयांस गर्भ में आये, माता सुनन्द हर्षाये।
छठ ज्येष्ठ कृष्ण की साजी, सिंहपुर नृप विष्णु पिताजी ॥

ओं ह्रीं ज्येष्ठकृष्णषष्ठ्यां गर्भकल्याणमण्डितश्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घं।

फाल्गुन कृष्णा ग्यारस को, जन्मे श्रेयांस स्वहित को।
नारक क्षण भर सुख पाते, त्रिभुवन जन हर्ष मनाते ॥

ओं ह्रीं फाल्गुनकृष्णैकादश्यां जन्मकल्याणमण्डितश्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घं।

फाल्गुन कलि ग्यारस आयी, प्रभु ने तप लक्ष्मी पायी।
ऋतु शोभा नश्वर जानी, तब तप लेने की ठानी ॥

ओं ह्रीं फाल्गुनकृष्णैकादश्यां तपःकल्याणमण्डितश्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घं।

दो वर्ष किया तप भारी, तब घाति कर्म विधि जारी।
जब माघ अमावस कारी, कैवल्य ज्ञान उजियारी ॥

ओं ह्रीं माघकृष्णामावस्यायां ज्ञानकल्याणमण्डितश्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घं।

श्रावण की पूनम आयी, तब शिव रमणी परिणायी।
सम्मेद शिखर शिव पाया, हम सबने शीश झुकाया ॥

ओं ह्रीं श्रावणशुक्लापूर्णिमायां मोक्षकल्याणमण्डितश्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घं।

जयमाला (यशोगान)

चौपाई छन्द

छ्यासठ लख छब्बीस हजारा, वर्ष हीन इक सागर प्यारा।
सौ सागर पल्यार्द्ध गुजारा, शीतल बाद श्रेय अवतारा ॥
लख चौरासी वर्षायुष थी, अन्तराल में यह शामिल थी।
ऋतु परिवर्तन लख वैरागी, तप धरने प्रभु आतम जागी ॥
विमल प्रभाख्य पालकी आयी, प्रभु आरूढ़ हुये मुस्कायी।
भूचर नर सत पग ले जाते, खेचर नर सत डग ले जाते ॥
फिर सुर देव पालकी लेते, दीक्षा वन तक सेवा देते।

केशलोंच की विधि अपनायी, चन्द्रकान्त मणि शिला सुहायी॥
बेला साथ नियम तप धारा, सिद्धारथ गृह किया अहारा।
एक सहस नृप दीक्षित होते, कर्म मलों को तप से धोते ॥
तुम्बुर तरु तल केवल पाया, भव्यों को शिव पथ दर्शाया।
घात अघाति मोक्ष को पाते, अजर अमर अव्यय हो जाते ॥
चारों गति से छूट गये हैं, सदा सदा को सुखी हुए हैं।
हमको शीघ्र बुला लो स्वामी, मृदु मन के प्रभु अन्तर्यामी ॥

ओं ह्रीं श्री श्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

श्रेयोजिन निर्वाण दिन, रक्षाबन्धन पर्व।
दोनों पर्व मना रहे, हित करने हम सर्व ॥
गैंड़ा पद में शोभता, श्रेयोजिन पहचान।
विद्यासागर सूरि से, मृदुमति पाती ज्ञान ॥

॥ इति शुभम् भूयात् ॥

●●●

श्री अकंपनाचार्यादि सप्तशत महामुनि पूजा

रेवती छन्द

अकंपन सूरि आदिक जो, सात सौ साधु गुणधारी,
सात दिन रात परिषह को, सहा समता धरी प्यारी।
विष्णु मुनिराज ने इनका, महा उपसर्ग टाला है,
सुगुरु शिष्यों की रक्षा कर, सुगुण वात्सल्य पाला है।
उन्हीं मुनि संघ को हम सब, भक्ति से अब बुलाते हैं,
हृदय में स्थापना करके, निकट कर भक्ति गाते हैं ॥

ओं ह्रीं अकम्पनादिसप्तशतमुनीन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

जिनगीतिका

जिनधर्म श्रद्धा नीर पीकर, जीतते जो प्यास को,
उन सूरि श्रमणों के पदों को, पूजते शिव वास को।
उपसर्ग विजयी अकम्पनादिक, सप्त शत मुनि को भजूँ,
मुनि संघ रक्षक विष्णु मुनि को, पूज वत्सलता यजूँ ॥

ओं ह्रीं अकम्पनादिसप्तशतमुनीन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि. स्वाहा।

उपसर्ग की दुर्गन्ध सहते, साम्य चन्दन गन्ध ले,
उन सूरि श्रमणों के पदों को, आतमा तू वन्द ले।
उपसर्ग विजयी अकम्पनादिक, सप्त शत मुनि को भजूँ,
मुनि संघ रक्षक विष्णु मुनि को, पूज वत्सलता यजूँ ॥

ओं ह्रीं अकम्पनादिसप्तशतमुनीन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं नि. स्वाहा।

रत्नत्रयों के अक्षतों से, सौख्य अक्षय पायेंगे,
उन सूरि श्रमणों के पदों को, पूज भवि शिव जायेंगे।
उपसर्ग विजयी अकम्पनादिक, सप्त शत मुनि को भजूँ,
मुनि संघ रक्षक विष्णु मुनि को, पूज वत्सलता यजूँ ॥

ओं ह्रीं अकम्पनादिसप्तशतमुनीन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि. स्वाहा।

चारित्र गुण की पुष्पमाला, धारते नित कण्ठ में,
उन सूरि श्रमणों के पदों को, पूजता उत्कण्ठ मैं।
उपसर्ग विजयी अकम्पनादिक, सप्त शत मुनि को भजूँ,
मुनि संघ रक्षक विष्णु मुनि को, पूज वत्सलता यजूँ ॥

ओं ह्रीं अकम्पनादिसप्तशतमुनीन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं नि. स्वाहा।

जो अनशनादिक सत्तपों से, भूख की बाधा हरें,
उन सूरि श्रमणों के पदों को, पूज गुण साधा करें।
उपसर्ग विजयी अकम्पनादिक, सप्त शत मुनि को भजूँ,
मुनि संघ रक्षक विष्णु मुनि को, पूज वत्सलता यजूँ ॥

ओं ह्रीं अकम्पनादिसप्तशतमुनीन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि. स्वाहा।

संसार दुखमय चिन्त्य निशदिन, मोह ध्वान्त विनाशते,
उन सूरि श्रमणों के पदों को, पूज ज्ञान विकासते।
उपसर्ग विजयी अकम्पनादिक, सप्त शत मुनि को भजूँ,
मुनि संघ रक्षक विष्णु मुनि को, पूज वत्सलता यजूँ ॥

ओं ह्रीं अकम्पनादिसप्तशतमुनीन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं नि. स्वाहा।

शुभ अशुभ फल में साम्य धरके, कर्म को निर्जर करें,
उन सूरि श्रमणों के पदों को, पूज अघ संवर करें।
उपसर्ग विजयी अकम्पनादिक, सप्त शत मुनि को भजूँ,
मुनि संघ रक्षक विष्णु मुनि को, पूज वत्सलता यजूँ ॥

ओं ह्रीं अकम्पनादिसप्तशतमुनीन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं नि. स्वाहा।

उपसर्ग परिषह जीत कर के, कर्म फल को जीतते,
उन सूरि श्रमणों के पदों को, पूज दुख से रीतते।
उपसर्ग विजयी अकम्पनादिक, सप्त शत मुनि को भजूँ,
मुनि संघ रक्षक विष्णु मुनि को, पूज वत्सलता यजूँ ॥

ओं ह्रीं अकम्पनादिसप्तशतमुनीन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि. स्वाहा।

शिव सिद्ध पद को प्राप्त करने, साधना करते महां,
उन सूरि श्रमणों के पदों को, पूजते मृदु जन यहाँ।

उपसर्ग विजयी अकम्पनादिक, सप्त शत मुनि को भजूँ,
मुनि संघ रक्षक विष्णु मुनि को, पूज वत्सलता यजूँ ॥

ओं ह्रीं अकम्पनादिसप्तशतमुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं नि. स्वाहा।

जयमाला (यशोगान)

विद्याब्धि छन्द - हे दीन बंधु

अकंपनादि सात सौ, मुनियों की वंदना।
उपसर्गहारी विष्णु महा, मुनि की अर्चना ॥ध्रुव॥
उज्जैन नगर जैन के, उत्कृष्ट घर जहाँ।
श्रीवर्मा नृप के सचिव थे, बलि आदि चउ वहाँ ॥
ये दुष्ट थे स्वभाव से, मुनियों से द्वेष था।
राजा के साथ संत दर्श का, किलेश था ॥1॥
मुनि दर्श कर नृपति, नगर को जा रहे जभी।
श्रुतसिन्धु मुनि आहार करके, आ रहे तभी ॥
मुनि से विवाद करके बलि, हारता जभी।
श्रुतसिन्धु ने गुरुदेव से आ, कह दिया सभी ॥2॥
गुरु ने विचार कर कहा, तुमने गलत किया।
खल से विवाद कर, ससंघ कष्ट ढा दिया ॥
मुनि ने कहा कि संघ का, संकट टले सही।
गुरु ने कहा विवाद जहाँ, ध्यान कर वहीं ॥3॥
मुनियों के प्राणघात को, रात्रि में खल चले।
श्रुतसिन्धु को ज्यों देख, मारने को झट बढ़े ॥
वनदेवी ने उन चार के कर, कील थिर किये।
प्रातः नृपति ने देश से, बाहर उन्हें किये ॥4॥
बलि आदि हस्तिनागपुरी, नृप से जा मिले।
युक्ति से स्थान प्राप्त करके, पद लिये भले ॥
सिंहरथ को जीत 'पद्म' से, वरदान ले लिया।
आगे कभी ग्रहण करूँ, ये कह के रख दिया ॥5॥

अवसर को देख मंत्री ने, उपसर्ग ढा दिया।
मुनि संघ ने उपसर्ग तक, संन्यास ले लिया ॥
मुनि संघ पे उपसर्ग, श्रवण[1] काँपते जाना।
मुनि सारचन्द्र का, मुनि विष्णु को बुलाना ॥6॥
उपसर्ग टालने को विष्णु, गजपुरी गये।
बल विक्रिया से रूप धार, वटु बने नये ॥
याचक का विष्णु मुनिवर ने, रूप धर लिया।
बलिराज से डग तीन भू को, दान में लिया ॥7॥
तब विक्रिया से देह को, विशाल कर लिये।
दो डग से मेरु मनुजोत्तर, अद्रि छू लिये ॥
पग तीसरे को भूमि न, बचती जभी बली।
निज पीठ दे के, दान मुक्त, हो गया छली ॥8॥
डग तीन भूमि लेने का, अभिप्राय जान के।
चरणों में क्षमा मांगता, अपराध मान के ॥
मुनिराज ने मुनियों का कष्ट, दूर कर दिया।
मुनि संघ की रक्षा का, जग को ज्ञान दे दिया ॥9॥
रक्षा के बाद विष्णु ने, मुनि रूप धर लिया।
याचक का रूप धारने का, दण्ड ले लिया ॥
नृप पद्मराय ने किया, नमोस्तु संघ को।
उपसर्ग दूर हो गया, उठिये आहार को ॥10॥
मुनिभक्त साधु संघ को, आहार कराते।
क्षीरान्न दे मुनीश्वरों को, भाग्य मनाते ॥
मुनि रक्षा हेतु सबके कर में, राखी बँध गयी।
श्रावण की पूर्णिमा सुनो, मृदु पर्व बन गयी ॥11॥

ओं ह्रीं अकम्पनादिसप्तशतकमुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं नि. स्वाहा।

उपसर्गों को सह लिया, करके निज का ध्यान।
सूरि अकम्पन आदि सह, विष्णु मुनीश प्रणाम ॥
रक्षाबंधन पर्व पर, कर मुनियों को याद,
प्रथम अतिथि को दान दो, भोजन करना बाद ॥

●●●

श्री विष्णुकुमार महामुनि पूजा

दोहा छन्द

विष्णु महामुनि नाम है, रत्नत्रय पर्याय।
यति उपसर्ग निवारते, हथिनापुर में आय ॥

ज्ञानोदय छन्द

धर्ममूर्ति वात्सल्य मूर्ति मुनि, विष्णु ऋषीश्वर तुम्हें नमन,
सप्त शतक मुनि की रक्षा कर, पर्व दिया मुनि रक्षा दिन।
श्रमण संस्कृति दिवस तुम्हीं से, मुनि बनने साहस तुमसे,
वह शिक्षा दी मुनि हन्ता को, कोई न मुनि हन्ता जिससे।
सप्त दिवस से मुनिगण पीड़ित, सारचन्द्र मुनि ने जाना,
मुनियों का उपसर्ग टालने, योग्य विष्णु ऋषि को माना।
ऋद्धि विक्रिया धर मुनि वत्सल, ऋषि हथिनापुर आते हैं,
सुयुक्ति बल से संकट हरने, बलि को सबक सिखाते हैं।
श्रावण पूनम मुनि रक्षा दिन, हे मुनि! विष्णु हृदय आओ,
जन जन में वात्सल्य सुधा की, धारा आप बहा जाओ ॥

ओं ह्रीं श्रीविष्णुकुमारमुनीन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

रेवती/रेखता छन्द

तर्ज- सजा लो मन को मन्दिर सा, यहाँ मुनिराज आये हैं.....।
लगे कुटिया ये तीरथ सी, सुधा वात्सल्य लाये हैं.....।
दर्शनाचार से तुमने, मुक्ति का लक्ष्य साधा है,
किया मन नीर सा निर्मल, ध्यान में चित्त बाँधा है।
अकंपन आदि मुनियों पर, हुए उपसर्ग को टाला,
बहायी विष्णु ऋषि तुमने, सुधा वात्सल्य की धारा ॥

ओं ह्रीं श्रीविष्णुकुमारमुनीन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि. स्वाहा।

गुरु श्रुतज्ञान से तुमने, ज्ञान का पार पाया है,
चढ़ाऊँ भक्ति का चन्दन, निजामृत पान भाया है।
अकंपन आदि मुनियों पर, हुए उपसर्ग को टाला,

बहायी विष्णु ऋषि तुमने, सुधा वात्सल्य की धारा ॥

ओं ह्रीं श्रीविष्णुकुमारमुनीन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं नि. स्वाहा।

मूलगुण रत्नधर तुममें, अहिंसा जगमगाती है,
चमकते अक्षतों से गुण, मुक्ति अक्षय बुलाती है।
अकंपन आदि मुनियों पर, हुए उपसर्ग को टाला,
बहायी विष्णु ऋषि तुमने, सुधा वात्सल्य की धारा ॥

ओं ह्रीं श्रीविष्णुकुमारमुनीन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि. स्वाहा।

तपों से काम पर जय कर, विक्रिया ऋद्धि पायी है,
इसी से संघ रक्षा की, वही तिथि पर्व भायी है।
अकंपन आदि मुनियों पर, हुए उपसर्ग को टाला,
बहायी विष्णु ऋषि तुमने, सुधा वात्सल्य की धारा ॥

ओं ह्रीं श्रीविष्णुकुमारमुनीन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं नि. स्वाहा।

कभी निज बल छिपाया ना, आपने अनशनादिक में,
तभी जीता क्षुधादिक को, भजूँ गुरु शक्ति को नित मैं।
अकंपन आदि मुनियों पर, हुए उपसर्ग को टाला,
बहायी विष्णु ऋषि तुमने, सुधा वात्सल्य की धारा ॥

ओं ह्रीं श्रीविष्णुकुमारमुनीन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि. स्वाहा।

क्षमादिक दीप से तुमने, मोह का तम निवारा है,
श्रमण रक्षा का ये दीपक, गुरो! तुमने उजारा है।
अकंपन आदि मुनियों पर, हुए उपसर्ग को टाला,
बहायी विष्णु ऋषि तुमने, सुधा वात्सल्य की धारा ॥

ओं ह्रीं श्रीविष्णुकुमारमुनीन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं नि. स्वाहा।

भावना पावनी बल से, ध्यान का तेज दमकाया,
कर्म को धूप कर होमा, सुरभि से आत्म महकाया।
अकंपन आदि मुनियों पर, हुए उपसर्ग को टाला,
बहायी विष्णु ऋषि तुमने, सुधा वात्सल्य की धारा ॥

ओं ह्रीं श्रीविष्णुकुमारमुनीन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं नि. स्वाहा।

परीषह जय पताका ले, मोक्ष साम्राज्य फल पाया,
विरोधी कर्म का अरि दल, काँपता पास ना आया।

अकंपन आदि मुनियों पर, हुए उपसर्ग को टाला,
बहायी विष्णु ऋषि तुमने, सुधा वात्सल्य की धारा ॥

ओं ह्रीं श्रीविष्णुकुमारमुनीन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि. स्वाहा।

हारती कर्म की सेना, मुक्ति ने ताज पहनाया,
अर्घ का मूल्य रह जाता, अनर्घी सौख्य जब पाया।
अकंपन आदि मुनियों पर, हुए उपसर्ग को टाला,
बहायी विष्णु ऋषि तुमने, सुधा वात्सल्य की धारा ॥

ओं ह्रीं श्रीविष्णुकुमारमुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं नि. स्वाहा।

जयमाला (यशोगान)

दोहा छन्द

श्रेयो जिन का मोक्ष दिन, मुनि रक्षा दिन जान।
रक्षित रक्षक साधु को, नमूँ श्रेय भगवान ॥

ज्ञानोदय छन्द

मल्लिनाथ शिव बाद विरह में, अकंपनादि मुनीश हुये,
विहार करते सप्त शतक मुनि, गजपुर वन में वास किये।
यहीं आदि जिन श्रेयो नृप गृह, प्रथम पारणा करते हैं,
शान्ति कुन्थु अरनाथ यहीं पर, त्रय कल्याणक धरते हैं ॥1॥
नवमें महापद्म चक्री की, पद्म विष्णु सुत की जननी,
विष्णु पिता सह दीक्षित होते, पद्म राज करते अवनी।
पद्म भूप से बलि मन्त्री ने, छल से गजपुर राज्य लिया,
किया संघ पर घोर उपद्रव, मुनियों ने संन्यास लिया ॥2॥
मुनियों को पशुओं की बलि सम, चौतरफा से घेर लिया,
सभी दिशा में अग्नि कुण्ड कर, असह धूमकर होम किया।
सात दिवस तक मुनीश्वरों ने, समता से उपसर्ग सहे,
मुनियों पर उपसर्ग जान मुनि, सारचन्द्र ने वचन कहे ॥3॥
तप प्रभाव से विष्णु श्रमण ने, ऋद्धि विक्रिया पायी है,
वही वहाँ जा सुयुक्ति बल से, कष्ट हरें दुखदायी हैं।
विष्णु श्रमण तक क्षुल्लक द्वारा, मुनि संदेशा पहुँचाते,
और विक्रिया तुम्हें प्राप्त है, यह भी गुरुवर कहलाते ॥4॥

समाचार सुन हाथ बढ़ाया, हाथ दूर तक पहुँच गया,
तभी जन्म नगरी हथिनापुर, जाने शीघ्र विचार किया।
विक्रिय बल से विष्णु मुनीश्वर, हथिनापुर को जाते हैं,
वहाँ पहुँच मुनि हन्ता बलि को, सुयुक्ति सबक सिखाते हैं ॥5॥
मुनि वटु ने बलि को अशीषा, बलि बोला भिक्षा लीजे,
मुनि बोले मम पग से त्रय पग, भूमि जलांजलि युत दीजे।
वर मिलते तन को विशाल कर, नपी मनुज भू द्वय पग से,
तीजे पग को बली पीठ दी, करूँ न प्रभु दुष्कृत फिर से ॥6॥
क्षमादान कर दयालु मुनि ने, मुनियों के बन्धन तोड़े,
और सूरि से भिक्षा चर्या, हेतु विनय की कर जोड़े।
श्रावक जन ने मिष्ट खीर से, संघ पारणा करवायी,
जन जन ने मुनि रक्षा व्रत ले, कर में राखी बँधवायी ॥7॥
यति वात्सल्य धार मुनिवर ने, रक्षा दीप जलाया है,
तप कर केवलज्ञान प्राप्त कर, मुक्ति रमा को पाया है।
धन्य तपस्या धन्य मुनीश्वर, धन्य साधु रक्षक मुनिवर,
मृदुमति नमन करे गुरुओं को, गुरु जुग जुग जीवें भूपर ॥8॥

ओं ह्रीं श्रीविष्णुकुमारमुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घं नि. स्वाहा।।

मुनियों पर उपसर्ग सुन, आये विष्णुकुमार।
श्रावण पूनम बन गयी, यति रक्षा त्यौहार ॥

। इति शुभम् भूयात्।

●●●

अर्घ

गुरु निर्ग्रन्थ ग्रन्थ के दाता, ज्ञानसागराचार्य नमन,
श्रमण संस्कृति के उन्नायक, विद्यासागर सूरि नमन।
श्रमण संस्कृति पालक पोषक, निर्यापक पद युक्त श्रमण,
पूज्य सुधासागर यतिवर के, पद कमलों में करूँ नमन ॥

ओं ह्रीं श्रमणसंस्कृतिसंरक्षक आचार्यश्रीज्ञानसागर-आचार्यश्रीविद्यासागरमुनीन्द्राभ्यां निर्यापकश्रमणश्रीसुधासागरमुनीन्द्राय च अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्व. स्वाहा।

श्री अकंपनाचार्यादि सप्तशत महामुनि अर्घावली

1-ओं ह्रीं अकंपनाचार्यमहामुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
2-ओं ह्रीं द्वितीयमुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
3-ओं ह्रीं तृतीयमुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
4-ओं ह्रीं चतुर्थमुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
5-ओं ह्रीं पंचममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
6-ओं ह्रीं षष्ठमुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
7-ओं ह्रीं सप्तममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
8-ओं ह्रीं अष्टममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
9-ओं ह्रीं नवममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
10-ओं ह्रीं दशममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
11-ओं ह्रीं एकादशमुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
12-ओं ह्रीं द्वादशमुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
13-ओं ह्रीं त्रयोदशमुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
14-ओं ह्रीं चतुर्दशमुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
15-ओं ह्रीं पंचदशमुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
16-ओं ह्रीं षोडशमुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
17-ओं ह्रीं सप्तदशमुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
18-ओं ह्रीं अष्टादशमुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
19-ओं ह्रीं एकोनविंशतितममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
20-ओं ह्रीं विंशतितममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
21-ओं ह्रीं एकविंशतितममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
22-ओं ह्रीं द्वाविंशतितममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
23-ओं ह्रीं त्रयोविंशतितममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
24-ओं ह्रीं चतुर्विंशतितममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
25-ओं ह्रीं पंचविंशतितममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

26-ओं ह्रीं षड्विंशतितममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
27-ओं ह्रीं सप्तविंशतितममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
28-ओं ह्रीं अष्टाविंशतितममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
29-ओं ह्रीं एकोनत्रिंशत्तममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
30-ओं ह्रीं त्रिंशत्तममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
31-ओं ह्रीं एकत्रिंशत्तममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
32-ओं ह्रीं द्वात्रिंशत्तममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
33-ओं ह्रीं त्रयस्त्रिंशत्तममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
34-ओं ह्रीं चतुस्त्रिंशत्तममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
35-ओं ह्रीं पञ्चत्रिंशत्तममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
36-ओं ह्रीं षट्त्रिंशत्तममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
37-ओं ह्रीं सप्तत्रिंशत्तममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
38-ओं ह्रीं अष्टत्रिंशत्तममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
39-ओं ह्रीं एकोनचत्वारिंशत्तममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा. स्वाहा।
40-ओं ह्रीं चत्वारिंशत्तममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
41-ओं ह्रीं एकचत्वारिंशत्तममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
42-ओं ह्रीं द्विचत्वारिंशत्तममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
43-ओं ह्रीं त्रिचत्वारिंशत्तममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
44-ओं ह्रीं चतुश्चत्वारिंशत्तममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा. स्वाहा।
45-ओं ह्रीं पंचचत्वारिंशत्तममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
46-ओं ह्रीं षट्चत्वारिंशत्तममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
47-ओं ह्रीं सप्तचत्वारिंशत्तममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा. स्वाहा।
48-ओं ह्रीं अष्टचत्वारिंशत्तममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा. स्वाहा।
49-ओं ह्रीं एकोनपञ्चाशत्तममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा. स्वाहा।
50-ओं ह्रीं पञ्चाशत्तममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
51-ओं ह्रीं एकपञ्चाशत्तममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

52-ओं ह्रीं द्विपञ्चाशत्तममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
53-ओं ह्रीं त्रिपञ्चाशत्तममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
54-ओं ह्रीं चतु:पञ्चाशत्तममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
55-ओं ह्रीं पञ्चपञ्चाशत्तममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
56-ओं ह्रीं षट्पञ्चाशत्तममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
57-ओं ह्रीं सप्तपञ्चाशत्तममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
58-ओं ह्रीं अष्टपञ्चाशत्तममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
59-ओं ह्रीं एकोनषष्टितममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
60-ओं ह्रीं षष्टितममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
61-ओं ह्रीं एकषष्टितममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
62-ओं ह्रीं द्विषष्टितममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
63-ओं ह्रीं त्रिषष्टितममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
64-ओं ह्रीं चतुष्षष्टितममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
65-ओं ह्रीं पञ्चषष्टितममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
66-ओं ह्रीं षट्षष्टितममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
67-ओं ह्रीं सप्तषष्टितममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
68-ओं ह्रीं अष्टषष्टितममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
69-ओं ह्रीं एकोनसप्ततितममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
70-ओं ह्रीं सप्ततितममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
71-ओं ह्रीं एकसप्ततितममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
72-ओं ह्रीं द्विसप्ततितममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
73-ओं ह्रीं त्रिसप्ततितममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
74-ओं ह्रीं चतु:सप्ततितममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
75-ओं ह्रीं पञ्चसप्ततितममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
76-ओं ह्रीं षट्सप्ततितममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
77-ओं ह्रीं सप्तसप्ततितममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

78-ओं ह्रीं अष्टसप्ततितममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
79-ओं ह्रीं एकोनाशीतितममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
80-ओं ह्रीं अशीतितममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
81-ओं ह्रीं एकाशीतितममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
82-ओं ह्रीं द्व्यशीतितममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
83-ओं ह्रीं त्र्यशीतितममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
84-ओं ह्रीं चतुरशीतितममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
85-ओं ह्रीं पञ्चाशीतितममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
86-ओं ह्रीं षडशीतितममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
87-ओं ह्रीं सप्ताशीतितममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
88-ओं ह्रीं अष्टाशीतितममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
89-ओं ह्रीं एकोननवतितममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
90-ओं ह्रीं नवतितममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
91-ओं ह्रीं एकनवतितममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
92-ओं ह्रीं द्विनवतितममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
93-ओं ह्रीं त्रिनवतितममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
94-ओं ह्रीं चतुर्णवतितममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
95-ओं ह्रीं पञ्चनवतितममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
96-ओं ह्रीं षण्णवतितममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
97-ओं ह्रीं सप्तनवतितममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
98-ओं ह्रीं अष्टनवतितममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
99-ओं ह्रीं एकोनशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
100-ओं ह्रीं शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
101-ओं ह्रीं एकाधिकशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा. स्वाहा।
102-ओं ह्रीं द्व्यधिकशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
103-ओं ह्रीं त्र्यधिकशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

104-ओं ह्रीं चतुरधिकशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा. स्वाहा।
105-ओं ह्रीं पञ्चाधिकशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा. स्वाहा।
106-ओं ह्रीं षडधिकशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
107-ओं ह्रीं सप्ताधिकशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा. स्वाहा।
108-ओं ह्रीं अष्टाधिकशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा. स्वाहा।
109-ओं ह्रीं नवाधिकशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा. स्वाहा।
110-ओं ह्रीं दशाधिकशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा. स्वाहा।
111-ओं ह्रीं एकादशाधिकशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा. स्वाहा।
112-ओं ह्रीं द्वादशाधिकशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा. स्वाहा।
113-ओं ह्रीं त्रयोदशाधिकशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
114-ओं ह्रीं चतुर्दशाधिकशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
115-ओं ह्रीं पंचदशाधिकशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
116-ओं ह्रीं षोडशाधिकशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा. स्वाहा।
117-ओं ह्रीं सप्तदशाधिकशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
118-ओं ह्रीं अष्टादशाधिकशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
119-ओं ह्रीं एकोनविंशत्यधिकशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
120-ओं ह्रीं विंशत्यधिकशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा. स्वाहा।
121-ओं ह्रीं एकविंशत्यधिकशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
122-ओं ह्रीं द्वाविंशत्यधिकशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
123-ओं ह्रीं त्रयोविंशत्यधिकशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
124-ओं ह्रीं चतुर्विंशत्यधिकशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
125-ओं ह्रीं पंचविंशत्यधिकशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
126-ओं ह्रीं षड्विंशत्यधिकशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
127-ओं ह्रीं सप्तविंशत्यधिकशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
128-ओं ह्रीं अष्टाविंशत्यधिकशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
129-ओं ह्रीं एकोनत्रिंशदधिकशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।

130-ओं ह्रीं त्रिंशदधिकशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
131-ओं ह्रीं एकत्रिंशदधिकशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
132-ओं ह्रीं द्वात्रिंशदधिकशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
133-ओं ह्रीं त्रयस्त्रिंशदधिकशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
134-ओं ह्रीं चतुस्त्रिंशदधिकशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
135-ओं ह्रीं पञ्चत्रिंशदधिकशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
136-ओं ह्रीं षट्त्रिंशदधिकशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
137-ओं ह्रीं सप्तत्रिंशदधिकशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
138-ओं ह्रीं अष्टत्रिंशदधिकशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
139-ओं ह्रीं एकोनचत्वारिंशदधिकशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं ।
140-ओं ह्रीं चत्वारिंशदधिकशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
141-ओं ह्रीं एकचत्वारिंशदधिकशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
142-ओं ह्रीं द्विचत्वारिंशदधिकशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.
143-ओं ह्रीं त्रिचत्वारिंशदधिकशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
144-ओं ह्रीं चतुश्चत्वारिंशदधिकशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
145-ओं ह्रीं पंचचत्वारिंशदधिकशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।।
146-ओं ह्रीं षट्चत्वारिंशदधिकशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
147-ओं ह्रीं सप्तचत्वारिंशदधिकशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
148-ओं ह्रीं अष्टचत्वारिंशदधिकशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
149-ओं ह्रीं एकोनपञ्चाशदधिकशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
150-ओं ह्रीं पञ्चाशदधिकशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
151-ओं ह्रीं एकपञ्चाशदधिकशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
152-ओं ह्रीं द्विपञ्चाशदधिकशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व. ।
153-ओं ह्रीं त्रिपञ्चाशदधिकशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
154-ओं ह्रीं चतु:पञ्चाशदधिकशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
155-ओं ह्रीं पञ्चपञ्चाशदधिकशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।

156-ओं ह्रीं षट्पञ्चाशदधिकशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
157-ओं ह्रीं सप्तपञ्चाशदधिकशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
158-ओं ह्रीं अष्टपञ्चाशदधिकशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
159-ओं ह्रीं एकोनषष्ट्यधिकशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
160-ओं ह्रीं षष्ट्यधिकशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
161-ओं ह्रीं एकषष्ट्यधिकशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
162-ओं ह्रीं द्विषष्ट्यधिकशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
163-ओं ह्रीं त्रिषष्ट्यधिकशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
164-ओं ह्रीं चतुष्षष्ट्यधिकशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
165-ओं ह्रीं पञ्चषष्ट्यधिकशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
166-ओं ह्रीं षट्षष्ट्यधिकशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
167-ओं ह्रीं सप्तषष्ट्यधिकशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
168-ओं ह्रीं अष्टषष्ट्यधिकशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
169-ओं ह्रीं एकोनसप्तत्यधिकशततमतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
170-ओं ह्रीं सप्तत्यधिकशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
171-ओं ह्रीं एकसप्तत्यधिकशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
172-ओं ह्रीं द्विसप्तत्यधिकशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
173-ओं ह्रीं त्रिसप्तत्यधिकशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
174-ओं ह्रीं चतु:सप्तत्यधिकशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
175-ओं ह्रीं पञ्चसप्तत्यधिकशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
176-ओं ह्रीं षट्सप्तत्यधिकशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
177-ओं ह्रीं सप्तसप्तत्यधिकशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
178-ओं ह्रीं अष्टसप्तत्यधिकशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
179-ओं ह्रीं एकोनाशीत्यधिकशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
180-ओं ह्रीं अशीत्यधिकशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
81-ओं ह्रीं एकाशीत्यधिकशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।

182-ओं ह्रीं द्व्यशीत्यधिकशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
183-ओं ह्रीं त्र्यशीत्यधिकशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
184-ओं ह्रीं चतुरशीत्यधिकशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
185-ओं ह्रीं पञ्चाशीत्यधिकशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
186-ओं ह्रीं षडशीत्यधिकशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
187-ओं ह्रीं सप्ताशीत्यधिकशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
188-ओं ह्रीं अष्टाशीत्यधिकशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
189-ओं ह्रीं एकोननवत्यधिकशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
190-ओं ह्रीं नवत्यधिकशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.स्वाहा
191-ओं ह्रीं एकनवत्यधिकशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
192-ओं ह्रीं द्विनवत्यधिकशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
193-ओं ह्रीं त्रिनवत्यधिकशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
194-ओं ह्रीं चतुर्णवत्यधिकशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
195-ओं ह्रीं पञ्चनवत्यधिकशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।।
196-ओं ह्रीं षण्णवत्यधिकशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
197-ओं ह्रीं सप्तनवत्यधिकशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
198-ओं ह्रीं अष्टनवत्यधिकशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
199-ओं ह्रीं नवनवत्यधिकशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
200-ओं ह्रीं शतद्वयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
201-ओं ह्रीं एकाधिकशतद्वयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
202-ओं ह्रीं द्व्यधिकशतद्वयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
203-ओं ह्रीं त्र्यधिकशतद्वयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
204-ओं ह्रीं चतुरधिकशतद्वयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
205-ओं ह्रीं पञ्चाधिकशतद्वयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
206-ओं ह्रीं षडधिकशतद्वयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
207-ओं ह्रीं सप्ताधिकशतद्वयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।

208-ओं ह्रीं अष्टाधिकशतद्वयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा. ।
209-ओं ह्रीं नवाधिकशतद्वयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
210-ओं ह्रीं दशाधिकशतद्वयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
211-ओं ह्रीं एकादशाधिकशतद्वयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
212-ओं ह्रीं द्वादशाधिकशतद्वयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा. ।
213-ओं ह्रीं त्रयोदशाधिकशतद्वयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
214-ओं ह्रीं चतुर्दशाधिकशतद्वयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
215-ओं ह्रीं पंचदशाधिकशतद्वयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
216-ओं ह्रीं षोडशाधिकशतद्वयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
217-ओं ह्रीं सप्तदशाधिकशतद्वयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
218-ओं ह्रीं अष्टादशाधिकशतद्वयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
219-ओं ह्रीं नवदशाधिकशतद्वयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व।
220-ओं ह्रीं विंशत्यधिकशतद्वयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
221-ओं ह्रीं एकविंशत्यधिकशतद्वयतममुनीन्द्रायअनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
222-ओं ह्रीं द्वाविंशत्यधिकशतद्वयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
223-ओं ह्रीं त्रयोविंशत्यधिकशतद्वयतममुनीन्द्रायअनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
224-ओं ह्रीं चतुर्विंशत्यधिकशतद्वयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
225-ओं ह्रीं पंचविंशत्यधिकशतद्वयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
226-ओं ह्रीं षड्विंशत्यधिकशतद्वयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
227-ओं ह्रीं सप्तविंशत्यधिकशतद्वयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
228-ओं ह्रीं अष्टाविंशत्यधिकशतद्वयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
229-ओं ह्रीं नवविंशत्यधिकशतद्वयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
230-ओं ह्रीं त्रिंशदधिकशतद्वयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
231-ओं ह्रीं एकत्रिंशदधिकशतद्वयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
232-ओं ह्रीं द्वात्रिंशदधिकशतद्वयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
233-ओं ह्रीं त्रयस्त्रिंशदधिकशतद्वयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।

234-ओं ह्रीं चतुस्त्रिंशदधिकशतद्वयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
235-ओं ह्रीं पञ्चत्रिंशदधिकशतद्वयतममुनीन्द्रायअनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
236-ओं ह्रीं षट्त्रिंशदधिकशतद्वयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
237-ओं ह्रीं सप्तत्रिंशदधिकशतद्वयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
238-ओं ह्रीं अष्टत्रिंशदधिकशतद्वयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
239-ओं ह्रीं नवत्रिंशदधिकशतद्वयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं।
240-ओं ह्रीं चत्वारिंशदधिकशतद्वयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
241-ओं ह्रीं एकचत्वारिंशदधिकशतद्वयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं।
242-ओं ह्रीं द्विचत्वारिंशदधिकशतद्वयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व।
243-ओं ह्रीं त्रिचत्वारिंशदधिकशतद्वयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
244-ओं ह्रीं चतुश्चत्वारिंशदधिकशतद्वयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं।
245-ओं ह्रीं पंचचत्वारिंशदधिकशतद्वयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं।
246-ओं ह्रीं षट्चत्वारिंशदधिकशतद्वयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं।
247-ओं ह्रीं सप्तचत्वारिंशदधिकशतद्वयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं।
248-ओं ह्रीं अष्टचत्वारिंशदधिकशतद्वयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं।
249-ओं ह्रीं नवचत्वारिंशदधिकशतद्वयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं।
250-ओं ह्रीं पञ्चाशदधिकशतद्वयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
251-ओं ह्रीं एकपञ्चाशदधिकशतद्वयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं।
252-ओं ह्रीं द्विपञ्चाशदधिकशतद्वयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
253-ओं ह्रीं त्रिपञ्चाशदधिकशतद्वयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
254-ओं ह्रीं चतु:पञ्चाशदधिकशतद्वयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं।
255-ओं ह्रीं पञ्चपञ्चाशदधिकशतद्वयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं।
256-ओं ह्रीं षट्पञ्चाशदधिकशतद्वयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
257-ओं ह्रीं सप्तपञ्चाशदधिकशतद्वयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व।
258-ओं ह्रीं अष्टपञ्चाशदधिकशतद्वयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं।
259-ओं ह्रीं नवपञ्चाशदधिकशतद्वयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।

260-ओं ह्रीं षष्ट्यधिकशतद्वयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
261-ओं ह्रीं एकषष्ट्यधिकशतद्वयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
262-ओं ह्रीं द्विषष्ट्यधिकशतद्वयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
263-ओं ह्रीं त्रिषष्ट्यधिकशतद्वयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
264-ओं ह्रीं चतुष्षष्ट्यधिकशतद्वयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
265-ओं ह्रीं पञ्चषष्ट्यधिकशतद्वयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
266-ओं ह्रीं षट्षष्ट्यधिकशतद्वयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
267-ओं ह्रीं सप्तषष्ट्यधिकशतद्वयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
268-ओं ह्रीं अष्टषष्ट्यधिकशतद्वयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
269-ओं ह्रीं नवषष्ट्यधिकशतद्वयतमतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
270-ओं ह्रीं सप्तत्यधिकशतद्वयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
271-ओं ह्रीं एकसप्तत्यधिकशतद्वयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
272-ओं ह्रीं द्विसप्तत्यधिकशतद्वयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
273-ओं ह्रीं त्रिसप्तत्यधिकशतद्वयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
274-ओं ह्रीं चतुःसप्तत्यधिकशतद्वयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
275-ओं ह्रीं पञ्चसप्तत्यधिकशतद्वयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
276-ओं ह्रीं षट्सप्तत्यधिकशतद्वयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
277-ओं ह्रीं सप्तसप्तत्यधिकशतद्वयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
278-ओं ह्रीं अष्टसप्तत्यधिकशतद्वयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
279-ओं ह्रीं नवसप्तत्यधिकशतद्वयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
280-ओं ह्रीं अशीत्यधिकशतद्वयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
281-ओं ह्रीं एकाशीत्यधिकशतद्वयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
282-ओं ह्रीं द्व्यशीत्यधिकशतद्वयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
283-ओं ह्रीं त्र्यशीत्यधिकशतद्वयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
284-ओं ह्रीं चतुरशीत्यधिकशतद्वयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
285-ओं ह्रीं पञ्चाशीत्यधिकशतद्वयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा।

286-ओं ह्रीं षडशीत्यधिकशतद्वयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
287-ओं ह्रीं सप्ताशीत्यधिकशतद्वयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
288-ओं ह्रीं अष्टाशीत्यधिकशतद्वयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
289-ओं ह्रीं नवाशीत्यधिकशतद्वयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
290-ओं ह्रीं नवत्यधिकशतद्वयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
291-ओं ह्रीं एकनवत्यधिकशतद्वयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
292-ओं ह्रीं द्विनवत्यधिकशतद्वयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
293-ओं ह्रीं त्रिनवत्यधिकशतद्वयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
294-ओं ह्रीं चतुर्णवत्यधिकशतद्वयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
295-ओं ह्रीं पञ्चनवत्यधिकशतद्वयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
296-ओं ह्रीं षण्णवत्यधिकशतद्वयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
297-ओं ह्रीं सप्तनवत्यधिकशतद्वयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
298-ओं ह्रीं अष्टनवत्यधिकशतद्वयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
299-ओं ह्रीं नवनवत्यधिकशतद्वयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
300-ओं ह्रीं शतत्रयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
301-ओं ह्रीं एकाधिकशतत्रयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
302-ओं ह्रीं द्व्यधिकशतत्रयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
303-ओं ह्रीं त्र्यधिकशतत्रयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
304-ओं ह्रीं चतुरधिकशतत्रयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
305-ओं ह्रीं पञ्चाधिकशतत्रयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
306-ओं ह्रीं षडधिकशतत्रयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
307-ओं ह्रीं सप्ताधिकशतत्रयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
308-ओं ह्रीं अष्टाधिकशतत्रयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा. ।
309-ओं ह्रीं नवाधिकशतत्रयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
310-ओं ह्रीं दशाधिकशतत्रयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
311-ओं ह्रीं एकादशाधिकशतत्रयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।

312-ओं ह्रीं द्वादशाधिकशतत्रयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा. ।
313-ओं ह्रीं त्रयोदशाधिकशतत्रयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
314-ओं ह्रीं चतुर्दशाधिकशतत्रयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
315-ओं ह्रीं पंचदशाधिकशतत्रयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
316-ओं ह्रीं षोडशाधिकशतत्रयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
317-ओं ह्रीं सप्तदशाधिकशतत्रयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
318-ओं ह्रीं अष्टादशाधिकशतत्रयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
319-ओं ह्रीं नवदशाधिकशतत्रयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
320-ओं ह्रीं विंशत्यधिकशतत्रयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
321-ओं ह्रीं एकविंशत्यधिकशतत्रयतममुनीन्द्रायअनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
322-ओं ह्रीं द्वाविंशत्यधिकशतत्रयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
323-ओं ह्रीं त्रयोविंशत्यधिकशतत्रयतममुनीन्द्रायअनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
324-ओं ह्रीं चतुर्विंशत्यधिकशतत्रयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
325-ओं ह्रीं पंचविंशत्यधिकशतत्रयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
326-ओं ह्रीं षड्विंशत्यधिकशतत्रयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
327-ओं ह्रीं सप्तविंशत्यधिकशतत्रयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
328-ओं ह्रीं अष्टाविंशत्यधिकशतत्रयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
329-ओं ह्रीं नवविंशत्यदधिकशतत्रयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
330-ओं ह्रीं त्रिंशदधिकशतत्रयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
331-ओं ह्रीं एकत्रिंशदधिकशतत्रयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
332-ओं ह्रीं द्वात्रिंशदधिकशतत्रयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
333-ओं ह्रीं त्रयस्त्रिंशदधिकशतत्रयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
334-ओं ह्रीं चतुस्त्रिंशदधिकशतत्रयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
335-ओं ह्रीं पञ्चत्रिंशदधिकशतत्रयतममुनीन्द्रायअनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
336-ओं ह्रीं षट्त्रिंशदधिकशतत्रयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
337-ओं ह्रीं सप्तत्रिंशदधिकशतत्रयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।

338-ओं ह्रीं अष्टत्रिंशदधिकशतत्रयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
339-ओं ह्रीं नवत्रिंशदधिकशतत्रयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
340-ओं ह्रीं चत्वारिंशदधिकशतत्रयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
341-ओं ह्रीं एकचत्वारिंशदधिकशतत्रयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं।
342-ओं ह्रीं द्विचत्वारिंशदधिकशतत्रयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व।
343-ओं ह्रीं त्रिचत्वारिंशदधिकशतत्रयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व।
344-ओं ह्रीं चतुश्चत्वारिंशदधिकशतत्रयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं।
345-ओं ह्रीं पंचचत्वारिंशदधिकशतत्रयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं ।
346-ओं ह्रीं षट्चत्वारिंशदधिकशतत्रयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं।
347-ओं ह्रीं सप्तचत्वारिंशदधिकशतत्रयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं।
348-ओं ह्रीं अष्टचत्वारिंशदधिकशतत्रयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं।
349-ओं ह्रीं नवचत्वारिंशदधिकशतत्रयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं।
350-ओं ह्रीं पञ्चाशदधिकशतत्रयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
351-ओं ह्रीं एकपञ्चाशदधिकशतत्रयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व।
352-ओं ह्रीं द्विपञ्चाशदधिकशतत्रयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
353-ओं ह्रीं त्रिपञ्चाशदधिकशतत्रयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
354-ओं ह्रीं चतु:पञ्चाशदधिकशतत्रयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं नि.।
355-ओं ह्रीं पञ्चपञ्चाशदधिकशतत्रयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं नि.।
356-ओं ह्रीं षट्पञ्चाशदधिकशतत्रयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
357-ओं ह्रीं सप्तपञ्चाशदधिकशतत्रयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व।
358-ओं ह्रीं अष्टपञ्चाशदधिकशतत्रयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं नि.।
359-ओं ह्रीं नवपञ्चाशदधिकशतत्रयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
360-ओं ह्रीं षष्ट्यधिकशतत्रयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
361-ओं ह्रीं एकषष्ट्यधिकशतत्रयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
362-ओं ह्रीं द्विषष्ट्यधिकशतत्रयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
363-ओं ह्रीं त्रिषष्ट्यधिकशतत्रयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।

364-ओं ह्रीं चतुष्षष्ट्यधिकशतत्रयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
365-ओं ह्रीं पञ्चषष्ट्यधिकशतत्रयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
366-ओं ह्रीं षट्षष्ट्यधिकशतत्रयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
367-ओं ह्रीं सप्तषष्ट्यधिकशतत्रयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
368-ओं ह्रीं अष्टषष्ट्यधिकशतत्रयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
369-ओं ह्रीं नवषष्ट्यधिकशतत्रयतमतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
370-ओं ह्रीं सप्तत्यधिकशतत्रयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
371-ओं ह्रीं एकसप्तत्यधिकशतत्रयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा।
372-ओं ह्रीं द्विसप्तत्यधिकशतत्रयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
373-ओं ह्रीं त्रिसप्तत्यधिकशतत्रयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
374-ओं ह्रीं चतुःसप्तत्यधिकशतत्रयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
375-ओं ह्रीं पञ्चसप्तत्यधिकशतत्रयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
376-ओं ह्रीं षट्सप्तत्यधिकशतत्रयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
377-ओं ह्रीं सप्तसप्तत्यधिकशतत्रयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
378-ओं ह्रीं अष्टसप्तत्यधिकशतत्रयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
379-ओं ह्रीं नवसप्तत्यधिकशतत्रयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
380-ओं ह्रीं अशीत्यधिकशतत्रयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
381-ओं ह्रीं एकाशीत्यधिकशतत्रयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
382-ओं ह्रीं द्व्यशीत्यधिकशतत्रयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
383-ओं ह्रीं त्र्यशीत्यधिकशतत्रयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
384-ओं ह्रीं चतुरशीत्यधिकशतत्रयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
385-ओं ह्रीं पञ्चाशीत्यधिकशतत्रयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
386-ओं ह्रीं षडशीत्यधिकशतत्रयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
387-ओं ह्रीं सप्ताशीत्यधिकशतत्रयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
388-ओं ह्रीं अष्टाशीत्यधिकशतत्रयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
389-ओं ह्रीं नवाशीत्यधिकशतत्रयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।

390-ओं ह्रीं नवत्यधिकशतत्रयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
391-ओं ह्रीं एकनवत्यधिकशतत्रयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
392-ओं ह्रीं द्विनवत्यधिकशतत्रयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
393-ओं ह्रीं त्रिनवत्यधिकशतत्रयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
394-ओं ह्रीं चतुर्णवत्यधिकशतत्रयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
395-ओं ह्रीं पञ्चनवत्यधिकशतत्रयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
396-ओं ह्रीं षण्णवत्यधिकशतत्रयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
397-ओं ह्रीं सप्तनवत्यधिकशतत्रयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
398-ओं ह्रीं अष्टनवत्यधिकशतत्रयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
399-ओं ह्रीं नवनवत्यधिकशतत्रयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
400-ओं ह्रीं चतु:शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
401-ओं ह्रीं एकाधिकचतु:शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
402-ओं ह्रीं द्व्यधिकचतु:शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
403-ओं ह्रीं त्र्यधिकचतु:शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
404-ओं ह्रीं चतुरधिकचतु:शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
405-ओं ह्रीं पञ्चाधिकचतु:शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
406-ओं ह्रीं षडधिकचतु:शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
407-ओं ह्रीं सप्ताधिकचतु:शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
408-ओं ह्रीं अष्टाधिकचतु:शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
409-ओं ह्रीं नवाधिकचतु:शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
410-ओं ह्रीं दशाधिकचतु:शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
411-ओं ह्रीं एकादशाधिकचतु:शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
412-ओं ह्रीं द्वादशाधिकचतु:शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
413-ओं ह्रीं त्रयोदशाधिकचतु:शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
414-ओं ह्रीं चतुर्दशाधिकचतु:शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
415-ओं ह्रीं पंचदशाधिकचतु:शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।

416-ओं ह्रीं षोडशाधिकचतु:शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
417-ओं ह्रीं सप्तदशाधिकचतु:शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
418-ओं ह्रीं अष्टादशाधिकचतु:शततममुनीन्द्रायअनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
419-ओं ह्रीं नवदशाधिकचतु:शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
420-ओं ह्रीं विंशत्यधिकचतु:शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
421-ओं ह्रीं एकविंशत्यधिकचतु:शततममुनीन्द्रायअनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
422-ओं ह्रीं द्वाविंशत्यधिकचतु:शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
423-ओं ह्रीं त्रयोविंशत्यधिकचतु:शततममुनीन्द्रायअनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
424-ओं ह्रीं चतुर्विंशत्यधिकचतु:शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
425-ओं ह्रीं पंचविंशत्यधिकचतु:शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
426-ओं ह्रीं षड्विंशत्यधिकचतु:शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
427-ओं ह्रीं सप्तविंशत्यधिकचतु:शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
428-ओं ह्रीं अष्टाविंशत्यधिकचतु:शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व।
429-ओं ह्रीं नवविंशत्यदधिकचतु:शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
430-ओं ह्रीं त्रिंशदधिकचतु:शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
431-ओं ह्रीं एकत्रिंशदधिकचतु:शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
432-ओं ह्रीं द्वात्रिंशदधिकचतु:शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
433-ओं ह्रीं त्रयस्त्रिंशदधिकचतु:शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
434-ओं ह्रीं चतुस्त्रिंशदधिकचतु:शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
435-ओं ह्रीं पञ्चत्रिंशदधिकचतु:शततममुनीन्द्रायअनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
436-ओं ह्रीं षट्त्रिंशदधिकचतु:शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
437-ओं ह्रीं सप्तत्रिंशदधिकचतु:शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
438-ओं ह्रीं अष्टत्रिंशदधिकचतु:शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
439-ओं ह्रीं नवत्रिंशदधिकचतु:शतत्रयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं।
440-ओं ह्रीं चत्वारिंशदधिकचतु:शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
441-ओं ह्रीं एकचत्वारिंशदधिकचतु:शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं।

442-ओं ह्रीं द्विचत्वारिंशदधिकचतु:शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं नि.।
443-ओं ह्रीं त्रिचत्वारिंशदधिकचतु:शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं नि.।
444-ओं ह्रीं चतुश्चत्वारिंशदधिकचतु:शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं।
445-ओं ह्रीं पंचचत्वारिंशदधिकचतु:शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं।
446-ओं ह्रीं षट्चत्वारिंशदधिकचतु:शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं।
447-ओं ह्रीं सप्तचत्वारिंशदधिकचतु:शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं।
448-ओं ह्रीं अष्टचत्वारिंशदधिकचतु:शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं।
449-ओं ह्रीं नवचत्वारिंशदधिकचतु:शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं।
450-ओं ह्रीं पञ्चाशदधिकचतु:शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
451-ओं ह्रीं एकपञ्चाशदधिकचतु:शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं।
452-ओं ह्रीं द्विपञ्चाशदधिकचतु:शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
453-ओं ह्रीं त्रिपञ्चाशदधिकचतु:शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
454-ओं ह्रीं चतु:पञ्चाशदधिकचतु:शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं।
455-ओं ह्रीं पञ्चपञ्चाशदधिकचतु:शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं।
456-ओं ह्रीं षट्पञ्चाशदधिकचतु:शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं नि.।
457-ओं ह्रीं सप्तपञ्चाशदधिकचतु:शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं।
458-ओं ह्रीं अष्टपञ्चाशदधिकचतु:शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं।
459-ओं ह्रीं नवपञ्चाशदधिकचतु:शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं नि.।
460-ओं ह्रीं षष्ट्यधिकचतु:शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
461-ओं ह्रीं एकषष्ट्यधिकचतु:शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
462-ओं ह्रीं द्विषष्ट्यधिकचतु:शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
463-ओं ह्रीं त्रिषष्ट्यधिकचतु:शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
464-ओं ह्रीं चतुष्षष्ट्यधिकचतु:शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
465-ओं ह्रीं पञ्चषष्ट्यधिकचतु:शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
466-ओं ह्रीं षट्षष्ट्यधिकचतु:शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
467-ओं ह्रीं सप्तषष्ट्यधिकचतु:शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।

468-ओं ह्रीं अष्टषष्ट्यधिकचतु:शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
469-ओं ह्रीं नवषष्ट्यधिकचतु:शततमतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं नि.।
470-ओं ह्रीं सप्तत्यधिकचतु:शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
471-ओं ह्रीं एकसप्तत्यधिकचतु:शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽघ्य निर्व.।
472-ओं ह्रीं द्विसप्तत्यधिकचतु:शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
473-ओं ह्रीं त्रिसप्तत्यधिकचतु:शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
474-ओं ह्रीं चतु:सप्तत्यधिकचतु:शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
475-ओं ह्रीं पञ्चसप्तत्यधिकचतु:शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
476-ओं ह्रीं षट्सप्तत्यधिकचतु:शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
477-ओं ह्रीं सप्तसप्तत्यधिकचतु:शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
478-ओं ह्रीं अष्टसप्तत्यधिकचतु:शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
479-ओं ह्रीं नवसप्तत्यधिकचतु:शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
480-ओं ह्रीं अशीत्यधिकचतु:शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
481-ओं ह्रीं एकाशीत्यधिकचतु:शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
482-ओं ह्रीं द्व्यशीत्यधिकचतु:शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
483-ओं ह्रीं त्र्यशीत्यधिकचतु:शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
484-ओं ह्रीं चतुरशीत्यधिकचतु:शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
485-ओं ह्रीं पञ्चाशीत्यधिकचतु:शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
486-ओं ह्रीं षडशीत्यधिकचतु:शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
487-ओं ह्रीं सप्ताशीत्यधिकचतु:शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
488-ओं ह्रीं अष्टाशीत्यधिकचतु:शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
489-ओं ह्रीं नवाशीत्यधिकचतु:शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
490-ओं ह्रीं नवत्यधिकचतु:शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
491-ओं ह्रीं एकनवत्यधिकचतु:शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
492-ओं ह्रीं द्विनवत्यधिकचतु:शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
493-ओं ह्रीं त्रिनवत्यधिकचतु:शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।

494-ओं ह्रीं चतुर्णवत्यधिकचतु:शततममुनीन्द्रायअनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
495-ओं ह्रीं पञ्चनवत्यधिकचतु:शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
496-ओं ह्रीं षण्णवत्यधिकचतु:शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
497-ओं ह्रीं सप्तनवत्यधिकचतु:शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
498-ओं ह्रीं अष्टनवत्यधिकचतु:शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
499-ओं ह्रीं नवनवत्यधिकचतु:शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
500-ओं ह्रीं पञ्चशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
501-ओं ह्रीं एकाधिकपञ्चशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
502-ओं ह्रीं द्व्यधिकपञ्चशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
503-ओं ह्रीं त्र्यधिकपञ्चशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
504-ओं ह्रीं चतुरधिकपञ्चशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
505-ओं ह्रीं पञ्चाधिकपञ्चशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
506-ओं ह्रीं षडधिकपञ्चशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
507-ओं ह्रीं सप्ताधिकपञ्चशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
508-ओं ह्रीं अष्टाधिकपञ्चशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा. ।
509-ओं ह्रीं नवाधिकपञ्चशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
510-ओं ह्रीं दशाधिकपञ्चशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
511-ओं ह्रीं एकादशाधिकपञ्चशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
512-ओं ह्रीं द्वादशाधिकपञ्चशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
513-ओं ह्रीं त्रयोदशाधिकपञ्चशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
514-ओं ह्रीं चतुर्दशाधिकपञ्चशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
515-ओं ह्रीं पंचदशाधिकपञ्चशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
516-ओं ह्रीं षोडशाधिकपञ्चशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
517-ओं ह्रीं सप्तदशाधिकपञ्चशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
518-ओं ह्रीं अष्टादशाधिकपञ्चशततममुनीन्द्रायअनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
519-ओं ह्रीं नवदशाधिकपञ्चशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।

520-ओं ह्रीं विंशत्यधिकपञ्चशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
521-ओं ह्रीं एकविंशत्यधिकपञ्चशततममुनीन्द्रायअनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
522-ओं ह्रीं द्वाविंशत्यधिकपञ्चशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
523-ओं ह्रीं त्रयोविंशत्यधिकपञ्चशततममुनीन्द्रायअनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
524-ओं ह्रीं चतुर्विंशत्यधिकपञ्चशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
525-ओं ह्रीं पंचविंशत्यधिकपञ्चशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
526-ओं ह्रीं षड्विंशत्यधिकपञ्चशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
527-ओं ह्रीं सप्तविंशत्यधिकपञ्चशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
528-ओं ह्रीं अष्टाविंशत्यधिकपञ्चशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं नि.।
529-ओं ह्रीं नवविंशत्यदधिकपञ्चशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं नि.।
530-ओं ह्रीं त्रिंशदधिकपञ्चशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
531-ओं ह्रीं एकत्रिंशदधिकपञ्चशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
532-ओं ह्रीं द्वात्रिंशदधिकपञ्चशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
533-ओं ह्रीं त्रयस्त्रिंशदधिकपञ्चशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
534-ओं ह्रीं चतुस्त्रिंशदधिकपञ्चशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
535-ओं ह्रीं पञ्चत्रिंशदधिकपञ्चशततममुनीन्द्रायअनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
536-ओं ह्रीं षट्त्रिंशदधिकपञ्चशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
537-ओं ह्रीं सप्तत्रिंशदधिकपञ्चशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
538-ओं ह्रीं अष्टत्रिंशदधिकपञ्चशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
539-ओं ह्रीं नवत्रिंशदधिकपञ्चशतत्रयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं।
540-ओं ह्रीं चत्वारिंशदधिकपञ्चशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
541-ओं ह्रीं एकचत्वारिंशदधिकपञ्चशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं।
542-ओं ह्रीं द्विचत्वारिंशदधिकपञ्चशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं।
543-ओं ह्रीं त्रिचत्वारिंशदधिकपञ्चशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं।
544-ओं ह्रीं चतुश्चत्वारिंशदधिकपञ्चशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं।
545-ओं ह्रीं पंचचत्वारिंशदधिकपञ्चशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं।

546-ओं ह्रीं षट्चत्वारिंशदधिकपञ्चशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं।
547-ओं ह्रीं सप्तचत्वारिंशदधिकपञ्चशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं।
548-ओं ह्रीं अष्टचत्वारिंशदधिकपञ्चशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं।
549-ओं ह्रीं नवचत्वारिंशदधिकपञ्चशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं।
550-ओं ह्रीं पञ्चाशदधिकपञ्चशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
551-ओं ह्रीं एकपञ्चाशदधिकपञ्चशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं।
552-ओं ह्रीं द्विपञ्चाशदधिकपञ्चशततममुनीन्द्रायअनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
553-ओं ह्रीं त्रिपञ्चाशदधिकपञ्चशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं नि.।
554-ओं ह्रीं चतु:पञ्चाशदधिकपञ्चशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं।
555-ओं ह्रीं पञ्चपञ्चाशदधिकपञ्चशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं।
556-ओं ह्रीं षट्पञ्चाशदधिकपञ्चशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं नि.।
557-ओं ह्रीं सप्तपञ्चाशदधिकपञ्चशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं।
558-ओं ह्रीं अष्टपञ्चाशदधिकपञ्चशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं।
559-ओं ह्रीं नवपञ्चाशदधिकपञ्चशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं नि.।
560-ओं ह्रीं षष्ट्यधिकपञ्चशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
561-ओं ह्रीं एकषष्ट्यधिकपञ्चशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
562-ओं ह्रीं द्विषष्ट्यधिकपञ्चशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
563-ओं ह्रीं त्रिषष्ट्यधिकपञ्चशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
564-ओं ह्रीं चतुष्षष्ट्यधिकपञ्चशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
565-ओं ह्रीं पञ्चषष्ट्यधिकपञ्चशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
566-ओं ह्रीं षट्षष्ट्यधिकपञ्चशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
567-ओं ह्रीं सप्तषष्ट्यधिकपञ्चशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
568-ओं ह्रीं अष्टषष्ट्यधिकपञ्चशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
569-ओं ह्रीं नवषष्ट्यधिकपञ्चशततमतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं नि.।
570-ओं ह्रीं सप्तत्यधिकपञ्चशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
571-ओं ह्रीं एकसप्तत्यधिकपञ्चशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽघ्य निर्व.।

572-ओं ह्रीं द्विसप्तत्यधिकपञ्चशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
573-ओं ह्रीं त्रिसप्तत्यधिकपञ्चशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
574-ओं ह्रीं चतु:सप्तत्यधिकपञ्चशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
575-ओं ह्रीं पञ्चसप्तत्यधिकपञ्चशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व।
576-ओं ह्रीं षट्सप्तत्यधिकपञ्चशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
577-ओं ह्रीं सप्तसप्तत्यधिकपञ्चशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
578-ओं ह्रीं अष्टसप्तत्यधिकपञ्चशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
579-ओं ह्रीं नवसप्तत्यधिकपञ्चशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
580-ओं ह्रीं अशीत्यधिकपञ्चशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
581-ओं ह्रीं एकाशीत्यधिकपञ्चशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
582-ओं ह्रीं द्व्यशीत्यधिकपञ्चशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
583-ओं ह्रीं त्र्यशीत्यधिकपञ्चशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
584-ओं ह्रीं चतुरशीत्यधिकपञ्चशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
585-ओं ह्रीं पञ्चाशीत्यधिकपञ्चशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
586-ओं ह्रीं षडशीत्यधिकपञ्चशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
587-ओं ह्रीं सप्ताशीत्यधिकपञ्चशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
588-ओं ह्रीं अष्टाशीत्यधिकपञ्चशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
589-ओं ह्रीं नवाशीत्यधिकपञ्चशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
590-ओं ह्रीं नवत्यधिकपञ्चशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
591-ओं ह्रीं एकनवत्यधिकपञ्चशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
592-ओं ह्रीं द्विनवत्यधिकपञ्चशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
593-ओं ह्रीं त्रिनवत्यधिकपञ्चशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
594-ओं ह्रीं चतुर्णवत्यधिकपञ्चशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
595-ओं ह्रीं पञ्चनवत्यधिकपञ्चशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
596-ओं ह्रीं षण्णवत्यधिकपञ्चशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
597-ओं ह्रीं सप्तनवत्यधिकपञ्चशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।

598-ओं ह्रीं अष्टनवत्यधिकपञ्चशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
599-ओं ह्रीं नवनवत्यधिकपञ्चशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
600-ओं ह्रीं षट्शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
601-ओं ह्रीं एकाधिकषट्शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
602-ओं ह्रीं द्व्यधिकषट्शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
603-ओं ह्रीं त्र्यधिकषट्शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
604-ओं ह्रीं चतुरधिकषट्शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
605-ओं ह्रीं पञ्चाधिकषट्शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
606-ओं ह्रीं षडधिकषट्शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
607-ओं ह्रीं सप्ताधिकषट्शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
608-ओं ह्रीं अष्टाधिकषट्शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा. ।
609-ओं ह्रीं नवाधिकषट्शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
610-ओं ह्रीं दशाधिकषट्शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
611-ओं ह्रीं एकादशाधिकषट्शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
612-ओं ह्रीं द्वादशाधिकषट्शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
613-ओं ह्रीं त्रयोदशाधिकषट्शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
614-ओं ह्रीं चतुर्दशाधिकषट्शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
615-ओं ह्रीं पंचदशाधिकषट्शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
616-ओं ह्रीं षोडशाधिकषट्शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
617-ओं ह्रीं सप्तदशाधिकषट्शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
618-ओं ह्रीं अष्टादशाधिकषट्शततममुनीन्द्रायअनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
619-ओं ह्रीं नवदशाधिकषट्शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
620-ओं ह्रीं विंशत्यधिकषट्शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
621-ओं ह्रीं एकविंशत्यधिकषट्शततममुनीन्द्रायअनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
622-ओं ह्रीं द्वाविंशत्यधिकषट्शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
623-ओं ह्रीं त्रयोविंशत्यधिकषट्शततममुनीन्द्रायअनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।

624-ओं ह्रीं चतुर्विंशत्यधिकषट्शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
625-ओं ह्रीं पंचविंशत्यधिकषट्शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
626-ओं ह्रीं षड्विंशत्यधिकषट्शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
627-ओं ह्रीं सप्तविंशत्यधिकषट्शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
628-ओं ह्रीं अष्टाविंशत्यधिकषट्शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
629-ओं ह्रीं नवविंशत्यदधिकषट्शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
630-ओं ह्रीं त्रिंशदधिकषट्शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
631-ओं ह्रीं एकत्रिंशदधिकषट्शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
632-ओं ह्रीं द्वात्रिंशदधिकषट्शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
633-ओं ह्रीं त्रयस्त्रिंशदधिकषट्शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
634-ओं ह्रीं चतुस्त्रिंशदधिकषट्शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
635-ओं ह्रीं पञ्चत्रिंशदधिकषट्शततममुनीन्द्रायअनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
636-ओं ह्रीं षट्त्रिंशदधिकषट्शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
637-ओं ह्रीं सप्तत्रिंशदधिकषट्शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
638-ओं ह्रीं अष्टत्रिंशदधिकषट्शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
639-ओं ह्रीं नवत्रिंशदधिकषट्शतत्रयतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
640-ओं ह्रीं चत्वारिंशदधिकषट्शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
641-ओं ह्रीं एकचत्वारिंशदधिकषट्शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं।
642-ओं ह्रीं द्विचत्वारिंशदधिकषट्शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
643-ओं ह्रीं त्रिचत्वारिंशदधिकषट्शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
644-ओं ह्रीं चतुश्चत्वारिंशदधिकषट्शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं।
645-ओं ह्रीं पंचचत्वारिंशदधिकषट्शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं।
646-ओं ह्रीं षट्चत्वारिंशदधिकषट्शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं।
647-ओं ह्रीं सप्तचत्वारिंशदधिकषट्शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं।
648-ओं ह्रीं अष्टचत्वारिंशदधिकषट्शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं।
649-ओं ह्रीं नवचत्वारिंशदधिकषट्शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं नि.।

650-ओं ह्रीं पञ्चाशदधिकषट्शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
651-ओं ह्रीं एकपञ्चाशदधिकषट्शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व।
652-ओं ह्रीं द्विपञ्चाशदधिकषट्शततममुनीन्द्रायअनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
653-ओं ह्रीं त्रिपञ्चाशदधिकषट्शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
654-ओं ह्रीं चतु:पञ्चाशदधिकषट्शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं नि.।
655-ओं ह्रीं पञ्चपञ्चाशदधिकषट्शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं नि.।
656-ओं ह्रीं षट्पञ्चाशदधिकषट्शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं नि.।
657-ओं ह्रीं सप्तपञ्चाशदधिकषट्शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं नि.।
658-ओं ह्रीं अष्टपञ्चाशदधिकषट्शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं नि.।
659-ओं ह्रीं नवपञ्चाशदधिकषट्शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
660-ओं ह्रीं षष्ट्यधिकषट्शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
661-ओं ह्रीं एकषष्ट्यधिकषट्शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
662-ओं ह्रीं द्विषष्ट्यधिकषट्शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
663-ओं ह्रीं त्रिषष्ट्यधिकषट्शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
664-ओं ह्रीं चतुष्षष्ट्यधिकषट्शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
665-ओं ह्रीं पञ्चषष्ट्यधिकषट्शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
666-ओं ह्रीं षट्षष्ट्यधिकषट्शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
667-ओं ह्रीं सप्तषष्ट्यधिकषट्शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
668-ओं ह्रीं अष्टषष्ट्यधिकषट्शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
669-ओं ह्रीं नवषष्ट्यधिकषट्शततमतममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
670-ओं ह्रीं सप्तत्यधिकषट्शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
671-ओं ह्रीं एकसप्तत्यधिकषट्शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽघ्य निर्व.।
672-ओं ह्रीं द्विसप्तत्यधिकषट्शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
673-ओं ह्रीं त्रिसप्तत्यधिकषट्शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
674-ओं ह्रीं चतु:सप्तत्यधिकषट्शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
675-ओं ह्रीं पञ्चसप्तत्यधिकषट्शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।

676-ओं ह्रीं षट्सप्तत्यधिकषट्शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
677-ओं ह्रीं सप्तसप्तत्यधिकषट्शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
678-ओं ह्रीं अष्टसप्तत्यधिकषट्शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
679-ओं ह्रीं नवसप्तत्यधिकषट्शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
680-ओं ह्रीं अशीत्यधिकषट्शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
681-ओं ह्रीं एकाशीत्यधिकषट्शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
682-ओं ह्रीं द्व्यशीत्यधिकषट्शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
683-ओं ह्रीं त्र्यशीत्यधिकषट्शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
684-ओं ह्रीं चतुरशीत्यधिकषट्शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
685-ओं ह्रीं पञ्चाशीत्यधिकषट्शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
686-ओं ह्रीं षडशीत्यधिकषट्शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
687-ओं ह्रीं सप्ताशीत्यधिकषट्शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
688-ओं ह्रीं अष्टाशीत्यधिकषट्शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
689-ओं ह्रीं नवाशीत्यधिकषट्शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
690-ओं ह्रीं नवत्यधिकषट्शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
691-ओं ह्रीं एकनवत्यधिकषट्शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
692-ओं ह्रीं द्विनवत्यधिकषट्शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
693-ओं ह्रीं त्रिनवत्यधिकषट्शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
694-ओं ह्रीं चतुर्णवत्यधिकषट्शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
695-ओं ह्रीं पञ्चनवत्यधिकषट्शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
696-ओं ह्रीं षण्णवत्यधिकषट्शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
697-ओं ह्रीं सप्तनवत्यधिकषट्शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
698-ओं ह्रीं अष्टनवत्यधिकषट्शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व.।
699-ओं ह्रीं नवनवत्यधिकषट्शततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपा.।
700-ओं ह्रीं सप्तशततममुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रक्षाबन्धन कथा गाथा

विद्योदधि छन्द- तर्ज- आओ बच्चो तुम्हें बतायें.....

रक्षाबन्धन पर्व मनाने, जानो कथा ऋषीश की।
विष्णु महामुनि ने रक्षा की, अकम्पनादि मुनीश की ॥ध्रुव॥
जय मुनि रक्षा पर्व, जय मुनियों का धर्म।
सर्वोत्कृष्ट जैन होने से, नगर नाम उज्जैन पड़ा,
बड़े-बड़े मुनि संघ चरण से, सार्थक है उज्जैन बड़ा।
जैनधर्म की प्रभावशाली, उज्जैनी भूमीश थी,
विष्णु महामुनि ने रक्षा की, अकम्पनादि मुनीश की ॥1॥
इसी नगर में नीति निपुण नृप, प्रजापाल श्रीवर्मा थे,
किन्तु चार मन्त्री बलि आदिक, अभिमानी वैधर्मा थे।
सप्त शतक मुनि नायक आते, अकम्पनादि गणीश जी,
विष्णु महामुनि ने रक्षा की, अकम्पनादि मुनीश की ॥2॥
संत ठहर जाते नगरी के, बाह्य भाग इक उपवन में,
जन-जन में आगमन सूचना, फैल गई कुछ ही क्षण में।
किन्तु धर्मप्रेमी राजा को, खबर मिली न मुनीश की,
विष्णु महामुनि ने रक्षा की, अकम्पनादि मुनीश की ॥3॥
सूरि अकम्पन देश काल की, लोक स्थिति के ज्ञाता थे,
तभी दुष्ट मन्त्री मण्डल के, दुःस्वभाव के ज्ञाता थे।
सर्व संघ को मौन रूप से, रहना कहा गणीश जी,
विष्णु महामुनि ने रक्षा की, अकम्पनादि मुनीश की ॥4॥
राजा दर्शन को आ सकता, मन्त्री मण्डल आ सकता,
धर्म द्वेष वश मन्त्री मण्डल, अनिष्ट संकट ढा सकता।
शिष्यों के संकेत समय में, नहिं थे साधु श्रुतीश जी,
विष्णु महामुनि ने रक्षा की, अकम्पनादि मुनीश की ॥5॥
श्रीवर्मा नृप प्रजा साथ ले, गुरु दर्शन को आते हैं,

ज्ञान ध्यान तप लीन साधु को, देख नृपति हर्षाते हैं।
किन्तु मौन में अविनय देखी, मन्त्री ने अवनीश की,
विष्णु महामुनि ने रक्षा की, अकम्पनादि मुनीश की ॥6॥
चारों मन्त्री बोले नृप से, मौन लिये क्यों बैठे हैं,
निजी मूर्खता ढकने को मुनि, मौन वस्त्र ले ऐंठे हैं।
नहीं आप को देखा उनने, अविनय की अवनीश जी,
विष्णु महामुनि ने रक्षा की, अकम्पनादि मुनीश की ॥7॥
जिनके पास न धन लक्ष्मी है, वे क्या दे सकते नृप को,
वचनों से कुछ भी नहिं बोला, कैसे हर लें संकट को।
अकिंचनों के दर्शन से अब, होय अमंगल ईश जी,
विष्णु महामुनि ने रक्षा की, अकम्पनादि मुनीश की ॥8॥
राजा कहते सुनो मन्त्रियो! धर्म द्वेषता तजो जरा,
अग्नि दर्श से कोई जला क्या, विष लखने से कोई मरा।
दुर्गति होगी यदि निन्दा की, शील गुणाढ्य मुनीश की,
विष्णु महामुनि ने रक्षा की, अकम्पनादि मुनीश की ॥9॥
राजा मन्त्री प्रजा सहित ही, नगरी वापिस आते हैं,
भिक्षा करके लौटे पथ में, श्रुतसागर मिल जाते हैं।
पीत तक्र यह वृषभ आ रहा, बलि बोला अवनीश जी,
विष्णु महामुनि ने रक्षा की, अकम्पनादि मुनीश की ॥10॥
श्रुतसागर जी बोले सुनिये! तक्र पीत कब होता है,
यह सुन निज अपमान समझ बलि, नृप के पीछे होता है।
और कपट का जाल बनाता, हत्या करूँ मुनीश की,
विष्णु महामुनि ने रक्षा की, अकम्पनादि मुनीश की ॥11॥
पथ विवाद श्रुतसागर मुनि ने, गुरु को सत्य बताया है,
गुरुवर बोले विवाद करके, संघ कष्ट उपजाया है।
तब मुनि कहते मुझे दण्ड दो, संकट टले गणीश जी,

विष्णु महामुनि ने रक्षा की, अकम्पनादि मुनीश की ॥12॥
जहाँ विवाद हुआ था बलि से, उसी जगह तुम ध्यान करो,
गुरु आज्ञा से श्रुतसागर जी, करते हैं निज ध्यान खरो।
'नहिं विवाद करना' यह आज्ञा, नहिं सुन पाये श्रुतीश जी,
विष्णु महामुनि ने रक्षा की, अकम्पनादि मुनीश की ॥13॥
बलि आदिक चारों मन्त्री ने, घृणित योजना कर डाली,
अर्द्ध रात्रि में साधु संघ को, पूर्ण मारने तैयारी।
पथ में भेंट हुई चारों को, श्रुतसागर श्रुत ईश की,
विष्णु महामुनि ने रक्षा की, अकम्पनादि मुनीश की ॥14॥
बलि बोला विवाद था इससे, वे सब मुनि थे मौन धरें,
करो इसी पर वार किन्तु पर, कौन प्रथम असि वार करे ?
तब सब साथ उठाते असि को, लेने जान मुनीश की,
विष्णु महामुनि ने रक्षा की, अकम्पनादि मुनीश की ॥15॥
मुनि रक्षा हित वनदेवी ने, दुष्टों के कर कील दिये,
प्रात प्रजा ने देखे मन्त्री, मुनि हत्यारे क्रूर हिये।
राजा ने आकर धिक्कारी, दुष्ट क्रिया पापीश की,
विष्णु महामुनि ने रक्षा की, अकम्पनादि मुनीश की ॥16॥
मुनि हत्या का घृणित कार्य लख, मृत्यु दण्ड की आज्ञा दी,
मृत्यु दण्ड सुनते ही मुनि ने, ध्यानी मुद्रा झट तज दी।
अन्य दण्ड दे इन्हें सुधारो, नृप से कहें मुनीश जी,
विष्णु महामुनि ने रक्षा की, अकम्पनादि मुनीश की ॥17॥
तब राजा ने मुँह काला कर, देश निकाला दण्ड दिया,
मुनि हत्या का पाप दण्ड यह, सभी प्रजा ने जान लिया।
अपने गुरु को हाल सुनाकर, पाते शान्ति श्रुतीश जी,
विष्णु महामुनि ने रक्षा की, अकम्पनादि मुनीश की ॥18॥
एक समय वह दुष्ट मण्डली, हस्तिनागपुर पहुँच गयी,

वचन चातुरी से यह टोली, राजपदों पर पहुँच गयी।
कुरु जांगल की यह रजधानी, पद्मराय अवनीश की,
विष्णु महामुनि ने रक्षा की, अकम्पनादि मुनीश की ॥19॥
शान्ति कुन्थु अर तीर्थंकर के, जहाँ तीन कल्याण हुये,
महापद्म चक्री के सुत ये, विष्णु पद्म गणमान्य हुये।
इस हथिनापुर में मुनियों पर, संकट क्रिया बलीश की,
विष्णु महामुनि ने रक्षा की, अकम्पनादि मुनीश की ॥20॥
सूरि अकम्पन संघ साथ ले, हस्तिनागपुर आते हैं,
सप्त शतक मुनि संघ जानकर, बलि आदिक घबराते हैं।
उज्जैनी के मुनि प्रहार को, जान न लें अवनीश जी,
विष्णु महामुनि ने रक्षा की, अकम्पनादि मुनीश की ॥21॥
मुनियों का यह भक्त नगर है, राजा भी मुनि भक्त रहा,
जिन प्रभावना सहन न होगी, भारी मुनिवर भक्त यहाँ।
तब बलि ने सोचा खुद पाऊँ, रजधानी धरणीश की,
विष्णु महामुनि ने रक्षा की, अकम्पनादि मुनीश की ॥22॥
बलि ने कभी सिंहोदर नृप को, जीत पद्म का दास किया,
तब राजा ने मुँहमाँगा वर, देने का विश्वास दिया।
सप्त दिनों की सत्ता माँगी, मौका देख क्षितीश की,
विष्णु महामुनि ने रक्षा की, अकम्पनादि मुनीश की ॥23॥
पद्मराय तो छलि को वर दे, उसी समय से हार गये,
देना पड़ा राज बलि खल को, मुनि रक्षा अधिकार गये।
मुनियों को पीड़ित करने की, थी दुर्नीति बलीश की,
विष्णु महामुनि ने रक्षा की, अकम्पनादि मुनीश की ॥24॥
मुनियों की बलि देने बलि ने, मुनि उपवन को घेर लिया,
मुनियों की हत्या करने को, अग्नि कुण्ड तैयार किया।
नर पशु मेध यज्ञ के छल युत, दानेच्छा बलि ईश की,
विष्णु महामुनि ने रक्षा की, अकम्पनादि मुनीश की ॥25॥

महा अग्नि की प्रचंड लपटें, मुनियों का तन झुलसातीं,
किन्तु साधना की शीतलता, साधक का मन हर्षाती।
पूर्व कर्म को विनाश करने, दृढ़ता लखो मुनीश की,
विष्णु महामुनि ने रक्षा की, अकम्पनादि मुनीश की ॥26॥
मिथिला नगरी के उपवन में, सारचन्द्र मुनि ध्यान रता,
अर्द्ध रात्रि को नभ में देखा, इक नक्षत्र श्रवण हिलता।
ज्योतिष से मुनि संकट जाना, निकली आह मुनीश की,
विष्णु महामुनि ने रक्षा की, अकम्पनादि मुनीश की ॥27॥
पुष्पदन्त क्षुल्लक ने पूछा, गुरु क्या कहीं अनिष्ट हुआ?
गुरु ने कहा हस्तिनापुर में, मुनियों पर उपसर्ग हुआ।
विष्णु विक्रिया बल से उनको, बचा सके ऋद्धीश जी,
विष्णु महामुनि ने रक्षा की, अकम्पनादि मुनीश की ॥28॥
तत्क्षण क्षुल्लक विद्या बल से, धरणीभूषण गिरि आते,
बलि द्वारा उपसर्ग साधु पर, जान विष्णुमुनि कँप जाते।
आप विक्रिया बल से टालें, मुनि उपसर्ग मुनीश जी,
विष्णु महामुनि ने रक्षा की, अकम्पनादि मुनीश की ॥29॥
ऋद्धि जानने हाथ उठा तो, ज्योतिष मण्डल छू जाते,
बिन विलम्ब आकाश मार्ग से, विष्णु हस्तिनापुर आते।
पूर्व भ्रात गृह पहुँच डाँटते, लेते खबर क्षितीश की,
विष्णु महामुनि ने रक्षा की, अकम्पनादि मुनीश की ॥30॥
ऋषभनाथ के आहारों से, पवित्र यह धरती प्यारी,
शान्ति कुन्थु अर तीर्थंकर की, कल्याणक नगरी न्यारी।
हे नृप! तूने कीर्ति मलिन की, कुरुवंशी भूमीश की,
विष्णु महामुनि ने रक्षा की, अकम्पनादि मुनीश की ॥31॥
हे मुनिवर! मैं बलि को वर दे, फँसा दुष्ट के जालों में,
क्षमा करो उपसर्ग निवारो, कृपा करो हर हालों में।

छली बली को छलने याचक, बनते विष्णु ऋषीश जी,
विष्णु महामुनि ने रक्षा की, अकम्पनादि मुनीश की ॥32॥
सुन्दर बौना वटु ब्राह्मण का, रूप देख बलि चकित हुआ,
भिक्षां देहि सुन बलि बोला, क्या दूँ कह मन मथित हुआ।
मम त्रय पग से माप भूमि लूँ, इच्छा वटुक मुनीश की,
विष्णु महामुनि ने रक्षा की, अकम्पनादि मुनीश की ॥33॥
हस्तिनागपुर नरेश आगे, यह वटु इच्छा बौनी है,
तन बौना तो मति भी बौनी, लगता कुछ अनहोनी है।
अहंकारमय बोली निकली, छलिया भूप बलीश की,
विष्णु महामुनि ने रक्षा की, अकम्पनादि मुनीश की ॥34॥
बलि से विष्णु महामुनि बोले, देना हो तो झट दीजे,
बलि बोला सत्संग हेतु कुछ, और अधिक भू ले लीजे।
अमूल्य क्षण क्यों खराब करते, बोले विष्णु मुनीश जी,
विष्णु महामुनि ने रक्षा की, अकम्पनादि मुनीश की ॥35॥
रुष्ट न हो ऋषिराज तीन ही, पग धरती को ले लीजे,
अन्य किसी ऊँचे मनुष्य से, नाप उचित भू ले लीजे।
कौन रहा बौना ऊँचा यह, कहते विष्णु मुनीश जी,
विष्णु महामुनि ने रक्षा की, अकम्पनादि मुनीश की ॥36॥
फिर ठीक जहाँ चाहो ले लीजे, इक चबूतरा बाहर हो,
कटि टूटेगी छोटी कुटि में, आऊँगा शुभ अवसर हो।
बलि के मद ने हँसी उड़ायी, वटु कद विष्णु मुनीश की,
विष्णु महामुनि ने रक्षा की, अकम्पनादि मुनीश की ॥37॥
विप्र विष्णु बोले कटि टूटे, अहंकार का भार जहाँ,
कुटिया महल नहीं प्रासंगिक, तिपग भूमि दो सार कहा।
दान वचन के साथ जलाञ्जलि, दीजे कहा मुनीश जी,
विष्णु महामुनि ने रक्षा की, अकम्पनादि मुनीश की ॥38॥
तीन बार संकल्प करा मुनि, रूप विशाल बना लेते,

इक पग से सुमेरु दूजे से, नग मनुजोत्तर छू लेते।
तृतीय पग रखने भू दो बलि, कहते विष्णु मुनीश जी,
विष्णु महामुनि ने रक्षा की, अकम्पनादि मुनीश की ॥39॥
भू पर चौपाये पशु जैसा, बलि ने पीठ स्वयं की दी,
वटुक काय का विराट मानस, समझ बली ने शिक्षा ली।
क्षमा करो, अपराध हुआ है, बलि ने कहा मुनीश जी,
विष्णु महामुनि ने रक्षा की, अकम्पनादि मुनीश की ॥40॥
मुनि ने तत्क्षण साधु रूप को, प्रकट किया सम्मुख सबके,
पद्मराय नृप ने परिकर सह, तोड़े बन्धन उपवन के।
सूरि अकम्पन आदि साधु को, नमोऽस्तु किया मुनीश जी,
विष्णु महामुनि ने रक्षा की, अकम्पनादि मुनीश की ॥41॥
विष्णु मुनीश्वर सह जनता को, गुरु ने आशीर्वाद दिया,
मुनि उपसर्ग निवारक मुनि का, जनता ने जयनाद किया।
मोक्षमार्ग को किया प्रकाशित, अकम्पनादि ऋषीश जी,
विष्णु महामुनि ने रक्षा की, अकम्पनादि मुनीश की ॥42॥
धन्य आपकी तपः साधना, धन्य संघ मुनि का नामी,
दूर हुआ उपसर्ग आपका, भिक्षा चर्या हो स्वामी।
श्रावकजन ने सर्व संघ की, वैय्यावृत्ति सहर्ष की,
विष्णु महामुनि ने रक्षा की, अकम्पनादि मुनीश की ॥43॥
धूम्र विषैला होने से सब, मुनि के कण्ठ खराब हुये,
तब उनको पय पाक खीर दे, श्रावकजन सब धन्य हुये।
यह तिथि श्रावण शुक्ल पूर्णिमा, मुनि रक्षा दिन मान्य की,
विष्णु महामुनि ने रक्षा की, अकम्पनादि मुनीश की ॥44॥
मुनि रक्षा का सूत्र हाथ में, तब से जैनों ने बाँधा,
रक्षाबन्धन पर्व तभी से, सभी मनाते बिन बाधा।
विद्यासागर सूरि कृपा से, 'मृदुमति' भक्ति प्रणीत की,
विष्णु महामुनि ने रक्षा की, अकम्पनादि मुनीश की ॥45॥

रक्षाबन्धन पर्व मनाने, जानो कथा ऋषीश की,
विष्णु महामुनि ने रक्षा की, अकम्पनादि मुनीश की ॥
उपसर्गों को सह लिया, करके निज का ध्यान।
सूरि अकम्पन आदि सह, विष्णु मुनीश प्रणाम ॥

NEO

BLOCK & PRINTS

Since 1973

Computer Re-Setting by :

Jeetendra Patni

M. 98290 71922

29.07.2020

जैन साहित्य एवं मंदिर उपकरण

हमारे यहाँ सभी प्रकार का दिगंबर जैन एवं भारत के सभी प्रमुख
धार्मिक संस्थानों का सत साहित्य एवं मंदिर में उपयोग हेतु उपकरण
और प्रभावना में बाटने योग्य सामग्री सीमित मूल्य पर उपलब्ध है

(पांडुशिला ,सिंघासन, छत्र, चवर प्रातिहार्य,जाप माला ,मंगल कलश, पूजा बर्तन ,चंदोवा,तोरण ,झारी ,

(शुद्ध चांदी के उपकरण आर्डर पर निर्मित किया जाता है)

नोट:-हमारे यहाँ घरो में उपयोग हेतु ,साधुओ के उपयोग हेतु ,
अनुष्ठानों में उपयोग हेतु शुद्ध घी भी आर्डर पर
उपलब्ध कराया जाता है

SOURABH KUMAR JAIN
9993602663
77229 83010
SOURABHJN1989@GMAIL.COM

जय जिनेंद्र

श्री

शुद्ध घी

देशी गाय का शुद्ध घी

शुद्धता पूर्वक बनाया गया देशी घी

साधु व्रती एवं धार्मिक अनुष्ठानों को ध्यान में रखकर बनाया गया शुद्ध देशी घी

पहले इस्तेमाल करें फिर विश्वास करें

संपर्क सूत्र

CONTACT FOR ORDER
CALL AND WHATSAPP
9993602663
7722983010

Contact for order
Call and whatsapp
9993602663
7722983010

9993602663

10"
11"
13"

11"
13"
15"

णमोकार महामंत्र
णमो अरिहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आयरियाणं
णमो उवज्झायणं
णमो लोए सव्वसाहूण
एसो पंच णमोकारो, सव्व-पावप्पणासणो ।।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ।।

5feet

6.5

18/29
5.5

पीतल डिब्बा सेट

REDMI NOTE 5 PRO
MI DUAL CAMERA

WEIGHT
42040
Essae
DS-852

WEIGHT g
4060
Essae
DS-852

WEIGHT
2.1565

दिगंबर जैन ग्रंथो की पीडीएफ के लिये हमारे whatapp नंबर पर संपर्क करें

09993602663

सौरभ सागर (इंदौर)